वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT
2010-2011

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक प्रतिवेदन
1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक

विषय-सूची **पृष्ठ**

प्रस्तावना		1
संगठन		2
न्यास का निर्माण4		
सारांश		4
कलानिधि		
कार्यक्रम क	: संदर्भ पुस्तकालय	6
	प्रौद्योगिकी उन्नयन	7
	ए.बी.आई.ए. परियोजना	8
	पाण्डुलिपि पुस्तकालय	9
	संरक्षण प्रयोगशाला	11
कार्यक्रम ख	: मीडिया केन्द्र	12
	साँस्कृतिक सायंत्रिक संचार प्रयोगशाला	13
कलाकोश		
कार्यक्रम क	: कलातत्वकोश	18
कार्यक्रम ख	: कलामूलशास्त्र	18
कार्यक्रम ग	: कलासमालोचना	21
जनपद-सम्पदा		
कार्यक्रम क	: मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	24
कार्यक्रम ख	: बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ	24
कार्यक्रम ग	: जीवन-शैली अध्ययन	27
	उत्तर-पूर्व अध्ययन कार्यक्रम	33

कलादर्शन

प्रदर्शिनियाँ 35

सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चाएँ 37

क्षेत्रीय केन्द्र

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी 39

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी 40

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु 40

सूत्रधार

कार्मिक 42

आपूर्ति एवं सेवाएं 42

भवन परियोजना 42

अनुबन्ध

I) : इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यासी मण्डल (31.03.2011 तक) 43

II) : इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची (31.03.2011 तक) 45

III) : 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची 46

IV) : 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित व्याख्यानों/प्रस्तुतियों/प्रदर्शनियों की सूची 47

V) : 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची 48

VI) : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ/अवर अनुसंधान अध्येता/सलाहकारों के सहित 49

Contents

Introduction		51
Organisation		52
Formation of the Trust		54
Summary		54

KALĀNIDHI

Programme A :	Reference Library	55
	Technological Upgradation	57
	Abia Project	57
	Manuscripts Library	58
	Conservation Lab	59
Programme B :	Media Centre	60
	Cultural Informatics Lab	61

KALĀKOŚA

Programme A :	Kalātattvakośa	65
Programme B :	Kalāmūlaśāstra	65
Programme C :	Kalāsamālocana	67

JANAPADA SAMPADĀ

Programme A :	Ethnographic Collection	70
Programme B :	Multi media Presentation	70
Programme C :	Lifestyle Studies	73
	North East Study Programme	78

KALĀDARŚANA

Exhibitions 81

Public Lectures/Discussions 82

Regional Centres

Eastern Regional Centre, Varanas 85

North East Centre, Guwahati 85

Southern Regional Centre, Bengaluru 86

SŪTRADHĀRA

Personnel 87

Supplies and Services 87

Building Projects Committee 87

ANNEXURES

I) : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 31.3.2011) 88

II) : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Members of the Executive Committee (as on 31.3.2011) 90

III) : List of Exhibitions held in IGNCA from April 1, 2010 to March 31, 2011 91

IV) : List of Lectures held in IGNCA from April 1, 2010 to March 31, 2011 92

V) : List of the IGNCA Publications from April 1, 2010 to March 31, 2011 93

VI) : List of officers of the IGNCA, including Senior /Junior Research Fellows/consultants in the IGNCA (as on 31.3.2011) 94

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक विवरण- 2010-2011

प्रस्तावना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में 1987 में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि 'वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है'। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं - लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य; वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, जैसी दृश्य कलाएँ; फोटोग्राफी और फिल्म; अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसे प्रदर्शनात्मक कलाओं; तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। केन्द्र का उद्देश्य भारत और दुनिया में कला से सम्बन्धित क्षेत्रों और समुदायों के बीच में एक ही दृष्टिकोण को तथा भारत और उसके पड़ोसियों के मध्य अध्ययन वार्ता को पुनर्जीवित करना है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कलाओं के विषय में अधिगम की विलक्षणता इस तथ्य में परिलक्षित है, कि यह लोक और शास्त्रीय, मौखिक और श्रुत, लिखित और उच्चरित और प्राचीन और आधुनिक को एक परिपूर्णता में देखता है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद और अविच्छिन्नता पर बल दिया जाता है जो अन्ततः मनुष्य को मनुष्य के साथ और मनुष्य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने प्रकाशनों, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विचारगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं द्वारा अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य की

अभियक्ति करता है। स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसार कार्यक्रम की परिधि में आते हैं। बहु विषयक भौगोलिक अध्ययनों द्वारा यह अनुसंधान को पूर्ण बनाता है ताकि विकास प्रक्रिया में साँस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरक किया जा सके।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

2. कला, मानविकी और सामान्य साँस्कृतिक धरोहर से सम्बन्धित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य;
3. सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड़ संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना;
4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।
5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्बन्धी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है;
6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना;
7. विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;
8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और साँस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना;
9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और साँस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि प्रभाग में मल्टी मीडिया संग्रहों का एक संदर्भ पुस्तकालय शामिल है, जिसमें मुद्रित पुस्तकें, स्लाइड, माइक्रोफिल्म, फोटोग्राफ और दृश्य-श्रव्य सामग्री, एक संरक्षण प्रयोगशाला, एक मल्टी मीडिया इकाई और साँस्कृतिक अभिलेखागार शामिल हैं।

कलाकोश प्रभाग मौलिक अनुसंधान का कार्य करता है और अपने बहुस्तरीय और बहु-अनुशासनात्मक आयामों और साँस्कृतिक सम्बन्धों में बौधिक परम्पराओं की जाँच करता है। अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग के रूप में, यह अभ्यास के साथ मौखिक, दृश्य के साथ कर्ण सम्बन्धी, जीवन और कला, तथा सिद्धांत को व्यवहार के साथ संयुक्त करते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के अभिन्न ढांचे के अन्तर्गत रखने का प्रयास करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कलातत्वकोश-कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ; (ख) कलामूलशास्त्र-भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की श्रृंखला; (ग) कलासमालोचना-भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला; (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश; तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद सम्पदा प्रभाग कलाकोश के कार्यक्रमों का पूरक है। यह ग्रामीण परिवेश की समृद्ध बहुरंगीय विरासत और छोटे पैमाने पर समाज के पाठ्य से प्रसंग में स्थानांतरित करने पर ध्यान केन्द्रित करता है। इसकी गतिविधियाँ, जो एक समुदाय के आसपास घूमती हैं, को समाहित करते हुए जीवन शैली लोकपरम्परा अध्ययन कार्यक्रमों, और क्षेत्रसम्पदा पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इसने विकसित की हैं: (क) जनजातियों के बारे में संग्रह सहित लोक कला और शिल्प के सामग्री प्रलेखन का मौलिक संग्रह (ख) मल्टी मीडिया प्रस्तुतियाँ; और (ग) भारतीय साँस्कृतिक घटना और उनकी समग्रता और पारस्परिकता के लिए वैकल्पिक मॉडल विकसित करने, तथा पर्यावरण, पारिस्थितिकी, कृषि, सामाजिक-आर्थिक, साँस्कृतिक और राजनीतिक मानदंडों के अन्त:-संजाल करने हेतु, आदिवासी समुदायों के बहु-अनुशासनात्मक जीवनशैली अध्ययनों को शुरू किया है।

कलादर्शन प्रभाग एकीकृत विषयों और अवधारणाओं पर अंतर-अनुशासनात्मक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों और प्रस्तुतियों के लिए एक मंच प्रदान करता है। बाल जगत, बच्चों के लिए कार्यक्रम, इस प्रभाग की गतिविधियों के अंतर्गत आता है। यह इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के अनुसंधान को दृश्य और स्पर्श रूपों में प्रसार करने के द्वारा भारत और विश्व के बीच खिड़कियों को खोलता है।

कलानिधि और कलाकोश प्राथमिक और माध्यमिक सामग्री के संग्रह, मौलिक अवधारणाओं के अन्वेषण, रूप के सिद्धांतों की पहचान, सिद्धांत और पाठ्य (शास्त्र) और बौद्धिक बहस (विमर्श) के स्तर पर तकनीकी शब्दावलियों की व्याख्या और मार्ग के स्तर पर व्याख्या पर संकेन्द्रित करते हैं। जनपद सम्पदा और कलादर्शन लोक, देश और जन के स्तर

पर अभिव्यक्तियों, प्रक्रियाओं, जीवन कार्यों, जीवन शैलियों और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक साथ मिलकर, चार प्रभागों के कार्यक्रम कलाओं को उनके जीवन के तरीकों, निर्वाह और संसाधन प्रबंधन रणनीति और प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान विषयों के साथ सम्बन्धों के मूल संदर्भ में रखते हैं। अनुसंधान, प्रोग्रामिंग, और अंतिम परिणाम की पद्धतियाँ अनुरूप हैं, इस प्रकार प्रत्येक प्रभाग के काम को दूसरों के कार्यक्रमों का पूरक बनाती हैं।

यू.एन.डी.पी. सहायता से 1994 में स्थापित साँस्कृतिक सांयत्रिक संचार प्रयोगशाला एक विश्व स्तरीय प्रलेखन इकाई के रूप में उभरी है जो उस तरीके को प्रदर्शित करती है जिसमें जीवन और पर्यावरण के प्रबंधन, जिसमें मानव और गैर-मानव, कार्बनिक और अकार्बनिक समुदाय शामिल हैं, के लिए स्थायी रणनीति के आधार के रूप में, संस्कृति की समग्र और एकीकृत धारणा में साँस्कृतिक विरासत वस्तुतः निर्मित की जा सकती है। यह न केवल इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ की दुर्लभ पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, तस्वीरों, स्लाइडों और ऑडियो-वीडियो संग्रह के डिजिटलीकरण के लिए, अपितु संस्कृति मंत्रालय के तहत काम कर रहे अन्य संगठनों के लिए भी एक केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करता है।

सूत्रधार विभाग प्रशासनिक, प्रबंधकीय और संगठनात्मक समर्थन और सभी प्रभागों को सेवाएं प्रदान करता है।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ.16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, नई दिल्ली में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत गठन एवं पंजीकरण 24 मार्च, 1987 को किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा। वर्तमान समय में यह न्यास साँस्कृतिक मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

31 मार्च, 2011 को कार्यरत न्यासियों और कार्यकारी सदस्यों के नाम अनुबन्ध 1 और 2 पर दिए गए है।

आलोच्य वर्ष में ली गई गतिविधियों का सारांश

गुरू रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित समारोहों के अंश के रूप में इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने एक चलचित्र समारोह का आयोजन किया, जिसमें गुरू टैगोर के साहित्यिक कार्यों पर आधारित प्रमुख फिल्मी हस्तियों द्वारा बनाई गई फिल्मों को प्रदर्शित किया गया।

महाभारत सदियों से भारतीय चेतना के मुख्यधारा में रहा है। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने 'जय उत्सव' शीर्षक से एक विशाल बहुमुखी उत्सव का आयोजन करते हुए महाकाव्य से सम्बन्धित

कविताओं, संगीत, नृत्य, नाट्यशाला, धार्मिक कृतियां प्रथाओं तथा लोककथाओं को एक जगह एकत्रित किया। फरवरी–मार्च 2011 में चल रहे एक माह के कार्यक्रम से केन्द्र का खुला मैदान रंगों, प्रथाओं एवं संगीतों की धुन से जगमगा उठा क्योंकि अभिनेताओं की मंडली पर मंडली देश के विभिन्न भागों से आती रहीं और अपनी कलाओं को प्रस्तुत करती रहीं।

इतना ही महत्वपूर्ण एक और उत्सव ''आख्यान–ए सेलिब्रेशन ऑफ मास्कस, पपेट्स एण्ड पिक्चर शोमेन ट्रेडिशन्स ऑफ इंडिया'' केन्द्र द्वारा आयोजित किया गया जिसमें मुखौटों एवं कठपुतली अभिनयों, भारी पोशाकों से सुस्जित नाटकों, कार्यशालाएं एवं शैक्षणिक व्याख्यान जिनके माधयम से अभिनयों को ग्रथों एवं परम्पराओं से जोड़ा गया को दिखाया गया था।

इस वर्ष इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने दो नाट्यशाला त्योहारों को भी आयोजित किया। जिसमें आसाम के कोहिनूर रंगशाला का आयोजन नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के सहयोग से तथा उत्तर–पूर्व नाट्यशाला श्रीमंत शंकरदेवा कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से आयोजित किया गया।

राजा दीनदयाल के छायाचित्रों के बहुमूल्य अभिलेख संग्रहों को जनता के लिए अनावरण किया गया, इनमें अनेकों चित्र ऐसे थे जो पहली बार देखे गए। इस प्रदर्शिनी में इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के अभिलेखागार में मौजूद 2857 ग्लास प्लेट निगेटिवज़ के संग्रहों में से लगभग 200 पुनरुत्पादित छाया चित्रों को प्रदर्शित किया गया।

हंगरी के माता–पुत्री की युगल जोड़ी एलिजाबेथ सास एवं एलिजाबेथ ब्रूनर, ने जिन्होंने भारत को अपना घर बना लिया था, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में सर्वदा से एक विशेष स्थान रखा है। उन्होंने अपने चित्रकलाओं के विशाल भण्डार में से एक अंश के लिए इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ को उत्तराधिकारी बना दिया। माता एलिजाबेथ के जन्म शताब्दी समारोह को मनाते हुए इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने उनके चुनिन्दा चित्रकलाओं की, चित्रकार से सम्बन्धित प्रलेखों के साथ, एक प्रर्दशनी का आयोजन किया।

इ॰गाँ॰रा॰क॰ केन्द्र ने अपने चार्टर में दिए गए अधिदेश को ध्यान में रखते हुए अनेकों प्रकाशन निकाले, फिल्में बनाईं एवं व्याख्यान तथ संगोष्ठियों का आयोजन किया। केन्द्र ने अनेकों कला एवं संस्कृति से सम्बन्धित संस्थानों के साथ सहयोगात्मक कार्य भी किए। केन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तकों एवं आयोजित व्याख्यानों एवं संगोष्ठियों की सूची अंत में संलग्न है।

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा आलोच्य वर्ष में की गईं गतिविधियों का विभागानुसार सारांश निम्नलिखित है:

कलानिधि

कलानिधि, कलाओं के प्रमुख साँस्कृतिक संसाधन केन्द्र कलानिधि के मुख्य घटक हैं – मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशेज का विशाल

संग्रह, स्लाइडों का एक विशाल संग्रह, साँस्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत, दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा, कला और शिल्प का एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन। कलानिधि का मूल उद्देश्य अन्तर्विभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के शोधकर्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में हैं। इसमें अमुद्रित एवं मुद्रित स्रोत वस्तुओं की संख्या लगभग तीन लाख है। कलानिधि की प्रमुख यूनिट (इकाईयाँ) हैं: संदर्भ पुस्तकालय, रिप्रोग्राफी यूनिट, स्लाइड यूनिट तथा पाण्डुलिपि यूनिट।

कार्यक्रम 'क' : संदर्भ पुस्तकालय

कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कलाओं के व्यापक क्षेत्रों में एक विशाल संग्रह है। इसमें संस्कृत पालि, फारसी और अरबी की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के अनेक माइक्रोफिश, माइक्रोफिल्म एवं फोटोग्राफ्स तथा पुरातत्व, दर्शन, धार्मिक और परम्परागत अध्ययन, इतिहास और मानवशास्त्र, कला और साहित्य और लोक, ग्रामीण और समुदाय अध्ययन पर बहुविध रिप्रोग्राफ्स उपलब्ध है।

मुद्रित सामग्री

अर्जन

पुस्तकालय ने 1742 पुस्तकों का क्रय किया तथा 303 पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त कीं। श्री के.सी. बासु चौधरी संग्रह से भी 2000 पुस्तकें उपहार के रूप में अर्जित कीं। कलानिधि ने अपने दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह में 342 पुस्तकें जोड़ीं।

पत्रिकाएँ

पुस्तकालय ने 179 पत्रिकाएँ मंगवाईं। उनके विषय हैं- मानवशास्त्र, पुरातत्व, कला, ग्रन्थ विज्ञान, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान, संरक्षण, अभिनय कलाएँ, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा विज्ञान, साहित्य संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र प्राच्य अध्ययन, दर्शनशास्त्र, पुत्तल कला, धर्म, सामाजिक विज्ञान, थिएटर एवं क्षेत्रीय अध्ययन। सदस्यता पत्रिकाओं के 2487 निर्गम प्राप्त हुए थे और कलानिधि ने 2800 जिल्दबन्ध पत्रिकाएँ पंजीकृत की।

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ इस वर्ष के कुछ प्रकाशन

आख्यान उत्सव के दौरान प्रदर्शनी में मास्क

पुस्तकालय की सुविधाओं में प्रौद्योगिक उन्नयन

i) **पुस्तकों की पूर्वव्यापी कैटलॉगिंग:** आलोच्य वर्ष में 7600 पुस्तकों का वर्गीकरण तथा 7978 पुस्तकों की कैटलॉगिंग की गई एवं ऑनलाइन डाटा बेस में प्रविष्टि की गई।

ii) **इंडेक्सिंग एवं एबसट्रैक्टिंग डेटाबेस का विकासः** विभिन्न जनरल के 17000 पिछले अंकों के जो पुस्तकालय में उपलब्ध थे उनका ऑनलाइन डेटाबेस तैयार किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत, निम्नलिखित कार्य भी किए गएः

क) डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्सयायन द्वारा दिए गए संग्रहों के 1506 जिल्दबंद खण्डों का ऑनलाइन डेटाबेस उत्पादन एवं सम्पादन।

ख) पुस्तकालय में व्यवस्थित अनेकों जिल्दबंद खण्डों की अंश स्वामित्व के ढंग से सूची तैयार करना।

iii) **पुस्तकों की बार-कोडिंगः** 65,000 पुस्तकों पर बार-कोड लेबल एवं पुस्तकालय के अल्प स्टिकर लगाए गए।

iv) **डिजिटल पुस्तकालय की रचनाः**

क) 22,000 डिजिटल विजुअल ऑनलाइन डेटाबेस पर डाले गए।

ख) दुर्लभ पुस्तकों के लगभग 14,00,000 पृष्ठों को, जिनका पिछले वर्ष डिजिटीकरण किया गया था, पीडीएफ फाइल में आसानी के लिए परिवर्तित किया गया।

v) **पाण्डुलिपियों की कैटलॉगिंगः** कलानिधि प्रभाग में 2.5 लाख से अधिक उपलब्ध पाण्डुलिपियों की कैटलॉगिंग की जा रही है।

पुस्तकालय के संग्रहों का पुनर्गठनः पुनर्गठन का कार्य जो पिछले वर्ष आरम्भ किया गया था अभी चल रहा है। व्यक्तिगत संग्रहों का पुर्नगठन किया जा चुका है।

डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन से प्राप्त संग्रहों में पुस्तकों एवं नियत कालिक पत्रिकाओं की जिल्दबंदी, बार कोडिंग, प्रोसेसिंग एवं संरक्षण का कार्य पूरा किया जा चुका है। इस समय कुछ खुले पत्रों, कांफ्रेंस प्रोसिडिंग्स, शोध पत्रों इत्यादि पर प्रलेखन का कार्य चल रहा है।

ए.बी.आई.ए. परियोजना

ए.बी.आई.ए. का अर्थ है एनुअल बिब्लियोग्राफी ऑफ इण्डियन आर्कियोलॉजी (भारतीय पुरातत्व वार्षिक ग्रंथ सूची) है जिसे कैम संस्थान, लीडेन द्वारा 1926-73 के दौरान प्रकाशित किया गया था। 1996 में, इण्टरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर एशियन स्टडीज (आई.आई.ए.एस.), लीडेन ने इस ग्रंथ सूची को फिर से शुरू करने का प्रस्ताव रखा। नया संस्करण ए.बी.आई.ए. साउथ एण्ड साउथईस्ट एशियन आर्ट एण्ड आर्कियोलॉजी इंडेक्स (ए.बी.आई.ए. इंडेक्स) कहलाता है।

आईआईएएस, लीडेन ने एक ग्रन्थसूची सम्बन्धी इलेक्ट्रॉनिक ऑनलाइन डेटाबेस के संकलन तथा अनुरक्षण हेतु इस अंतर्राष्ट्रीय परियोजना को आरम्भ किया जो पूर्व और प्राचीन इतिहास, सामग्री संस्कृति, पुरालेख और प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन, मुद्राशास्त्र और सिजिलोग्राफी को आवृत्त करते हुए टीकाकृत रिकॉर्ड की आपूर्ति करता है। इस डेटाबेस से निकाली गई टीकाकृत ग्रंथ सूची ए.बी.आई.ए. सूचकांक के संस्करण सीडी-रॉम के अतिरिक्त एक मुद्रित संस्करण में प्रकाशित हुआ है।

ए.बी.आई.ए. डाटाबेस में लगभग 580 नए अभिलेख विकसित किए गए। 163 एनोटेटेड अभिलेख विद्वानों द्वारा तैयार किए गए थे। महाभारत से सम्बन्धित 1030 प्रविष्टियाँ तैयार करके कम्प्यूटर में डाली गई।

रिप्रोग्राफी

पाण्डुलिपि पुस्तकालय

विविध विषयों पर महत्वपूर्ण अप्रकाशित भारतीय पाण्डुलिपियाँ जो बिखरी हुई हैं या भारत और विदेशों में खण्डों में पड़ी हैं, जो शोधार्थियों की पहुँच के लिए कठिन हैं, को इकट्ठा करने के लम्बे समय से चले आ रहे मिशन की पूर्ति में, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने माइक्रोफिल्म/ माइक्रोफिश/डिजिटल संग्रह के रूप में एक पाण्डुलिपि लाइब्रेरी विकसित की है। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के द्वारा कम से कम 3000 पांडुलिपि खजानों की पहचान की गई है। कुछ चल रही माइक्रोफिल्मिंग परियोजनाएँ हैं:

राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, अलवर: देवनागरी लिपि में 256 आवरण पाण्डुलिपियाँ एवं पाण्डुलिपि परियोजना के माइक्रोफिल्मिंग के लिए 21 रोल्स प्राप्त किए गए। पाण्डुलिपियों के सभी 7553 डेटाशीट जो माइक्रोफिल्म थे खरीद लिए गए।

ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर: 226 माइक्रोफिल्म रोल्स एवं 3,221 पाण्डुलिपियाँ के आवरण प्राप्त किए गए। ओ.आर.आई. मैसूर से 9843 डाटा शीट प्राप्त किए गए।

आलोच्य वर्ष में, विभिन्न परियोजनाओं के कुल 5425 रोल्स का प्रतिलिपिकरण किया गया।

स्लाइड यूनिट

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के पास एशिया में स्लाइड्स के सबसे समृद्ध और सबसे बड़े संग्रहों में से एक है। इसके पास दुनियाभर के विभिन्न संग्रहालयों और पुस्तकालयों से संग्रह हैं, जो कॉपीराइट शर्तों के अधीन, संदर्भ और गैर वाणिज्यिक उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। स्लाइडें एक आसान- संदर्भ में व्यवस्थित हैं।

इस वर्ष लिबसिस डाटा बेस में 21,188 ई-स्लाइडस डाली गई तथा 1,048 कैटलॉग कार्ड की प्रविष्टियाँ की गई।

मुबंई एवं एलिफेंटा पर डिजिटल फॉर्मेट पर 150 दृश्य स्लाइड्स तैयार किए गए तथा स्लाइड संग्रह को बढ़ाया गया। स्लाइड एकक संग्रह में अम्बर फोर्ट के फोटो प्रलेख तथा 80 डिजिटल फोटोग्राफ्स भी जोड़े गए।

प्रसिद्ध कलाकार श्री बिनोय कुमार बहल से जो 10,000 प्रतिभाएं प्राप्त करनी थी उस कार्य में से 4000 प्रतिमाओं के साथ 78 हाई रिजोल्यूशन डी.वी.डी., अनुलिपियों के साथ, क्रय की गईं। इन डी.वी.डी. में दिल्ली, राजस्थान, वियतनाम, रूस, इंडोनेशिया, तमिलनाडु, गुजरात, हिमांचल प्रदेश, चीन, लाओ, श्री लंका, खजुराहो, तिब्बत, कश्मीर, आन्ध्र प्रदेश, लद्दाख, मंगोलिया, म्यानमार एवं थाईलैंड के एतिहासिक स्मारकों तथा दृश्यों के प्रतिबिम्ब हैं।

महाभारत पर अनेकों साहित्यक क्षेत्रों तथा दृष्टात्मक पाण्डुलिपियों से डेटा संकलित किए गए और उन्हें महाभारत पर प्रदर्शनी लगाने के लिए प्रयोग किया गया। विक्टोरिया एवं ऐलबर्ट म्युजियम, ब्रिटिश लाइब्रेरी एवं भारतीय क्षेत्रों जैसे रामपुर रजा लाइब्रेरी से प्राप्त दृष्टात्मक संग्रहों को भी प्राप्त किया गया।

सगोष्ठियाँ/कार्यशालाएं/प्रदर्शनियाँ

i) एक उच्च स्तरीय ब्रिटिश साँस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के दौरे के अवसर पर इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में उपलब्ध ब्रिटिश लाइब्रेरी, ब्रिटिश म्यूज़ियम एवं विक्टोरिया तथा एलबर्ट म्यूज़ियम के संग्रहों पर आधारित एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

ii) 20-21 अगस्त 2010 को कलानिधि एवं जर्मन बुक आफिस, नई दिल्ली ने 'जम्पस्टार्ट - ज्वाइन द डॉटस 2010' नामक एक उत्सव का आयोजन किया। इसने उन लोगों को जो बच्चों को प्यार करते हैं तथा उनके साथ कार्य करते हैं उनकी पुस्तकें पढ़ते हैं तथा उन व्यक्तियों को जो बच्चों की पुस्तके लिखते हैं, रचना करते हैं, प्रकाशित करते हैं तथा पढ़ते व प्रोत्साहित करते हैं को एकत्रित किया।

iii) इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के द्वारा आयोजित उत्तर-पूर्व कार्यक्रम के अवसर पर उत्तर-पूर्व की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई।

iv) कलानिधि में व्यक्तिगत संग्रहों की दुर्लभ पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

v) 26 से 28 नवम्बर 2010 को कलानिधि एवं बुकारु न्यास के सौजन्य से एक बच्चों का उत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर कथा वाचक सत्र, कठपुतली खेल, पुस्तक पढ़ना, चित्र प्रदशर्नी तथा शिल्प नुक्कड़ का भी आयोजन किया गया था।

vi) 8 सितम्बर 2010 को कलानिधि प्रभाग ने भारत सोका गकाई के सहयोग से डॉ. देसाकू इकेडा के शांती प्रस्तावना 2010 'टूवर्डस ए न्यू इरा ऑफ वैल्यु क्रिएशन' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में श्री मनीशंकर अय्यर, राज्य सभा सदस्य तथा डॉ. मिनोटी चटर्जी, प्रधानाचार्या, कमला नेहरू कॉलेज प्रमुख वक्ता थे।

vii) 10 से 25 फरवरी 2011 को महाभारत की जीवंत परम्पराओं 'जय उत्सव' के अवसर पर इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में महाभारत तथा सम्बन्धित विषयों पर पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर नौ पुस्तकालयों से 600 से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं। यह प्रदर्शनी विधानों तथा 1000 से अधिक परिदर्शकों द्वारा पूर्णरूप से सराही गई थी।

viii) 8 फरवरी 2011 को बसन्त पंचमी के अवसर पर कलानिधि वार्षिक दिवस मनाया गया, प्रो. मुशीरुल हसन, महानिदेशक भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय मुख्य अतिथि थे तथा डॉ. (श्रीमती) तुक तुक कुमार, सह सचिव साँस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री राजू बुद्धाराजू आदरणीय अतिथि थे। श्री राजू ने 'ट्रस्टवर्थी डिजिटल कलेक्शन' पर व्याख्यान भी दिया। कलानिधि संग्रहों पर एक जानकारी संगोष्ठी भी आयोजित की गई।

संरक्षण प्रयोगशाला

संरक्षण एकक ने अर्न्त-गृह परियोजनाओं पर कार्य किया। विवरण निम्नलिखित है:

1. प्रयोगशाला ने 250 मुखौटों को संरक्षित किया जो कि 'अख्यान' प्रदर्शनी के अंश थे।
2. 22 सूची पत्रों की मरम्मत की गई जिन्हें 'अख्यान' प्रर्दशनी में रखा गया था। प्रदर्शनी में दिखाने के लिए चर्म कठपुतलियाँ भी बनाई गई।
3. हरिकथा संग्रह से छः पुस्तकों को मरम्मत करके सुरक्षित किया गया।
4. डॉ. कपिला वात्स्यायन के संग्रहों में से जिन्हें एकशेषन किया जा रहा था उन्हें निवारक संरक्षक दिया गया।

29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2010 तक संरक्षण प्रयोगशाला ने फोटोग्राफिक सामग्रियों के संरक्षण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। डॉ. एल. लेवरड्रिन द्वारा आयोजित कार्यशाला सेंटर डि रिर्चश सुर ला कंजर्वेशसन्स डेस कलेक्शनंस पेरिस के सहयोग से आयोजित की गई थी।

1 से 10 फरवरी 2011 तक संरक्षण प्रयोगशाला ने आई.सी.सी.आर.ओ.एम. (युनेस्को) के सहयोग से बचाव संरक्षण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।

मीडिया केन्द्र

आरम्भ से ही इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ समुदायों की जीवन शैलियों एवं उनके धार्मिक क्रियाओं का प्रलेखन करता रहा है तथा महान व्यक्तियों का साक्षात्कार करता रहा है।

मीडिया केन्द्र ने इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के साँस्कृतिक अभिलेखागार के सहयोग से भी श्री गार्गा के पूरे जीवन भर के संग्रह को, जिसकी लागत लगभग दो करोड़ रुपये होगी, अर्जित किया। यह संग्रह मुख्यत: भारतीय सिनेमा के इतिहास से सम्बन्धित है। इसमें निगेटिवज़, फोटोग्राफ, पुस्तकें एवं अन्य प्रकाशन सम्मिलित है।

एकक ने 26,500 प्रतियाँ (इसके द्वारा उत्पादित फिल्मों/डाकुमेंट्रीज़ के 53 शीर्षकों के प्रतिएक के 500 प्रतियाँ) प्रसार के लिए प्राप्त कीं।

इस एकक के श्रव्य/दृष्टी वर्ग में एक पूर्ण केटालॉग की हुई पुस्तकालय है जो सबके लिए उपलब्ध है। इस वर्ष किए गए कुछ प्रमुख प्रलेखन कार्य निम्नलिखित हैं:

1. मीडिया केन्द्र ने विक्रय एवं प्रसार हेतु कुछ विषय वस्तु आधारित डी.वी.डी. का उत्पादन किया।
2. इस केन्द्र ने घराना परियोजना के अन्तर्गत गहन प्रलेखन किया।
3. इस केन्द्र के प्रमुख कार्य वीडियो प्रलेखन रहे।
4. छत्तीसगढ़ की रामकथा प्रथाओं तथा गुजरात के भीलों पर भी कार्य किया गया।
5. 'अख्यान' के अभिनयों की रिकार्डिंग की गई जिसके सजावट एवं मंच सज्जा सत्र भी सम्मिलित है।

यूनिट द्वारा आवश्यक उत्पादन-पश्चात् कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम - ख
साँस्कृतिक सांयत्रिक संचार प्रयोगशाला

साँस्कृतिक सांयत्रिक संचार प्रयोगशाला (सीआईएल) को कला और उपयोग के लिए अग्रणी सूचना प्रौद्योगिकी, विकास और नई प्रौद्योगिकी और साँस्कृतिक प्रलेखन के प्रदर्शन के बीच में सहयोग स्थापित करने के लिए बनाया गया था। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा अग्रणी कार्य को कुछ प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में कला और संस्कृति के क्षेत्र में इस वर्ष नीचे रखा गया है।

साँस्कृतिक सामग्रियों का डिजिटल प्रसार

विषयगत मल्टीमीडिया सीडी-रोम्स के इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशनः

1. संगोष्ठी ''एलिजाबेथ सास ब्रूनर और एलिजाबेथ ब्रूनर भारत के लिए समर्पित हंगरी के दो जीवन'' के दौरान एलिजाबेथ सास ब्रूनर और एलिजाबेथ ब्रूनर के जीवन और कार्य पर दो यात्री शीर्षक वाली एक संवादात्मक मल्टीमीडिया डीवीडी का 3 मई 2010 को विमोचन किया गया।

2. आख्यान के साथ संयोगात्मक ''आदमी और मुखौटा'' शीर्षक वाली संवादात्मक मल्टीमीडिया डीवीडी का 26 अक्टूबर 2010 को विमोचन किया गया था: मुखौटों, कठपुतलियों, और भारत की परम्पराओं के चित्र प्रदर्शन आयोजकों का एक उत्सव। 20 अक्टूबर से 20 नवंबर, 2010 तक कार्यक्रम के भाग के रूप में, सुनियोजित प्रदर्शनी में एक स्टॉल संस्थापित किया गया था।

3. 1 सितम्बर 2010 को एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा, कक्षा VI से कक्षा IX तक के छात्रों के लिए, एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ के निमित्त इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा अभिकल्पित और विकसित, ''भारतीय कला'' पर मल्टीमीडिया सीडीरॉम का विमोचन किया गया था।

4. देवनारायणी, गीत गोविन्दा, बृहदेश्वर परियोजनाओं पर कार्य प्रगति में है।

प्रसार

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने 24 सितंबर से 3 अक्टूबर 2010 तक तंजावुर में महान बृहदेश्वर मंदिर पेरिया कोविल के निर्माण के सहस्राब्दी समारोह में भाग लिया था। यह मंदिर जनपद सम्पदा के क्षेत्र-सम्पदा कार्यक्रम के अधीन दो परीक्षण परियोजनाओं में से एक है। मल्टीमीडिया के माध्यम से इसकी वास्तुकला और शास्त्र (आइकॉनोग्राफी) सहित मंदिर के विभिन्न पहलू प्रस्तुत किए गए थे। यह विवरण भी देता है कि मंदिर का निर्माण कैसे किया

गया था। वास्तुशिल्पीय रेखा चित्रों, चोला अवधि से चयनित चित्रकारियाँ और शिलालेखों (उत्कीर्ण लेख सम्बन्धी अभिलेखों) की कागज की छापें, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ प्रकाशन – तंजावुर बृहदेश्वर – एक वास्तुशिल्पीय अध्ययन, बृहदेश्वर मंदिर का शास्त्र (आइकॉनोग्राफी), बृहदेश्वर मंदिर –रूप और अर्थ, आकाश को मापना– बृहदेश्वर मंदिर की यात्रा (डीवीडी), कुम्बाभिषेखम– बृहदेश्वर मंदिर (डीवीडी) और देवदासी मुराई (मल्टीमीडिया सीडीरॉम) को बडा करके इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा प्रदर्शित वस्तुओं में शामिल किया गया था। विकास के अधीन बृहदेश्वर मंदिर पर मल्टीमीडिया परियोजना के पूर्वावलोकन के लिए दो कम्प्यूटर स्टॉल संस्थापित किए गए थे। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के प्रकाशन में डॉ. आर. नागास्वामी द्वारा लिखित बृहदेश्वर मंदिर – रूप और अर्थ का विमोचन माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था। प्रदर्शनी पाँच लाख से अधिक लोगों द्वारा देखी गयी थी और बहुत अच्छी सराहना की गई थी। प्रदर्शनी में दर्शकों के बीच में मुख्यमंत्री, उप–मुख्यमंत्री, राज्य के वित्त मंत्री, राज्य मंत्री–उच्च शिक्षा, और केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री उपस्थित थे। पहले तीन दिनों में प्रदर्शनी ने लगभग 5 लाख से अधिक लोगों को आकर्षित किया था और इस कारण से राज्य सरकार ने उद्घोषणा की थी कि यह 3 अक्टूबर, 2010 तक बढ़ा दी जाएगी।

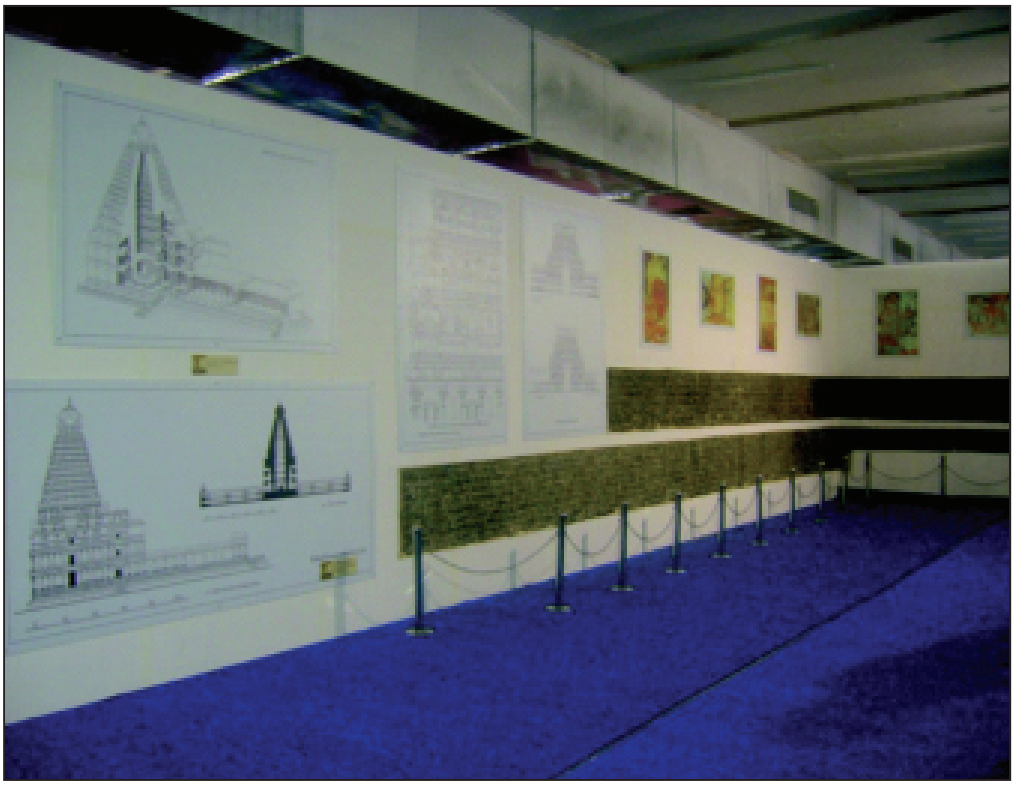

बृहदेश्वर मन्दिर, तनजावुर में इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा आयोजित प्रदर्शिनी का एक

एलिजाबेथ सास और एलिजाबेथ ब्रूनर पर इंटरैक्टिव सीडीरॉम 'दो यात्री' का विमोचन

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ वेबसाइट पर केन्द्रीय पुरातत्व पुस्तकालय, ए.एस.आई. से 2300 से अधिक दुर्लभ पुस्तकें और असम, राजस्थान, से पुरातात्विक स्थलों की डिजिटल छवियाँ, गंजीफ़ा कार्ड की छवियाँ तथा कुछ चयनिस वेबसाइटों का वॉकथ्रू अपलोड किए गए हैं। पुस्तकों और पुरातात्विक स्थलों के लिए खोज इंजन डेटा की आसान पुनर्प्राप्ति के लिए एकीकृत किया गया है। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ की चल रही गतिविधियों से सम्बन्धित सामग्रियाँ भी अपलोड की गई हैं। साइट से कुछ लिंक हैं:

* असम के पुरातत्वीय स्थलों (गुवाहाटी, करीमगंज, गोलाघाट, कामख्या, सिलचर शिवसागर, सोनितपुर जिले) की डिजिटल छवियाँ।
* इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में इस वर्ष के प्रमुख आयोजनों – 'आख्यान' और 'जय उत्सव' – की डिजिटल छवियाँ तथा वीडियो क्लिप।
* वाराणसी कार्यालय से प्राप्त गतिविधि रिपोर्ट और डिजिटल छवियाँ।
* सुश्री साशा लीमा, सोसायटी फॉर बर्ड स्टडीज की संस्थापक सदस्य द्वारा पुर्तगाल में दिए गए सार्वजनिक व्याख्यान (21 फरवरी 2011 को आयोजित) ''पुर्तगाली टाइलें: XVIवीं से XVIवीं सदी–सिनोग्राफिक प्रदर्शन'', पर रिपोर्ट और डिजिटल छवियाँ।

* मीडिया सेंटर से कैटलॉग और वीडियो क्लिप।

* कुमारजीवा सम्मेलन के सभी वक्ताओं की संकल्पना, सारांश, और सार-वृत्त (सीवी)।

एनआईसी रिकॉर्ड के अनुसार, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ वेबसाइट ने 2010-11 में 2,55,93,534 साइट हिट दर्ज की।

डिजिटल संसाधन विस्तार

1. पाण्डुलिपियों के 60,328 फोलियो युक्त 5888 माइक्रोफिश इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ संग्रह से डिजीटल किए गए थे।

2. ऐतिहासिक और पुरावशेषिक अध्ययन निदेशालय (डी.एच.ए.एस.) और श्रीमंत शंकरदेवा कलाक्षेत्र, गुवाहटी, आसाम में डिजीटल और दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संरक्षण और डिजिटलीकरण के तहत 5403 पाण्डुलिपियों को संरक्षित किया गया था।

3. साँस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (सी.सी.आर.टी.) के लिए 32,364 स्लाइड्स डिजीटल की गई थी और लगभग 41106 स्लाइड की डेटा प्रविष्टि पूरी की गई थी।

4. केन्द्रीय पुरातत्व पुस्तकालय की 12,274 दुर्लभ पुस्तकों का डिजिटाइजेशन पूरा किया गया।

5. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की 9114 दुर्लभ तस्वीरों का डिजिटाइजेशन किया गया था।

6. स्मारकों पर राष्ट्रीय आयोग और पुरावशेष (एन.एम.एम.ए.) के 1,72,032 पुरावशेष पंजीकरण प्रपत्रों को डिजीटल किया गया कुल संख्या 2,55,000 थी।

अन्य सरकारी संस्थानों के लिए परामर्श कार्य

1. भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) के मुद्रा नोटों को डिजाइन करने में सहयोग किया है।

2. संस्कृति मंत्रालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, आदि के लिए प्रस्तुतियाँ (दृष्टिगत रूप से) डिजाइन तैयार किया।

3. दिल्ली विरासत अनुसंधान और प्रबंधन संस्थान को कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की खरीद में सहयोग दिया।

प्रसिद्ध अभिनेता – श्रीमती सुषमा सेठ और श्री टॉम अल्टर–
कलानिधि–जर्मन बुक ऑफिस प्रोग्राम जम्पस्टार्ट में भाग लेने आए

बूकारू आयोजन के दौरान एक बच्चा प्रदर्शनी में एक दृष्टांत देखता हुआ

कलाकोश

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भों में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

क्रार्यक्रम 'क' : कलातत्वकोश
(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात लगभग 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की जाती है। इस श्रंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके छः खण्ड निकल चुके हैं। इस वर्ष कलातत्वकोश खण्ड सात के चार लेख प्राप्त हुए, जिनका सम्पादकीय कार्य जल्द ही पूरा हो जाएगा।

संदर्भ कार्ड

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के वाराणसी कार्यालय में कार्य जारी है, जिसमें संदर्भ कार्डों को पूर्वसूचित प्रासंगिक पाठों से तैयार किया जा रहा है। ये संदर्भ प्रत्येक सत्र से सम्बन्धित हैं। इस वर्ष, विभिन्न ग्रंथों से चयनित 4903 टाइप किए हुए कार्ड (कलातत्वकोश वॉल्यूम टप्प पर 181 कार्ड, कलातत्वकोश वॉल्यूम टप्प पर 185 कार्ड, कलातत्वकोश वॉल्यूम प पर 142 कार्ड और अन्य सत्रों पर 2295 कार्ड) तैयार किए गए थे। वर्तमान में कार्यालय में 60,063 कार्ड रखे हैं।

कार्यक्रम 'ख': कलामूलशास्त्र
(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की श्रृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम, तंत्र, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। 58 खंडों में 27 ग्रंथ पहले से ही इस श्रृंखला में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

कर्नाटक संगीत का एक संगीत ग्रंथ, रागलक्षणम् जो कि मैसूर के प्रो. आर. सत्यनारायण द्वारा संपादित और अनुवादित था, प्रकाशित किया गया था।

पंद्रह खंडों पर कार्य प्रगति पर है और 2011-12 में प्रकाशित होने की उम्मीद है। ये हैं:

वैदिक/सूत्र अनुष्ठान

1. **जैमिनीय ब्राह्मण :** प्रो. एच. जी. रानाडे द्वारा समालोचनात्मक ढंग से संपादित और अनुवादित
2. **वैदिक अनुष्ठानों का दृष्टान्त सहित शब्दकोश (हिन्दी संस्करण),** डॉ. मनोज कुमार मिश्रा द्वारा अनुवादित
3. **बौधायनस्रोत-सूत्र :** भावस्वामिन (चार खंडों में) के भाष्य के साथ प्रो. टी. एन. धर्माधिकारी द्वारा परिचय सहित समालोचनात्मक ढंग से संपादित
4. **कानवशतपथब्राह्मण वाल्यूम खण्ड-VI :** स्वर्गीय डॉ. सी. स्वामीनाथन द्वारा संपादित
5. **हिरनयाक्षीस्रोत सूत्रः** डॉ. पी. डी. नवाथे और श्री आर. एस. शास्त्री द्वारा संपादित और अनुवादित

वास्तुकला और नगर नियोजन

6. **समरांगनासूत्रधारः** (चार खंडों में) डॉ. पी. पी आप्टे और श्री सी. वी. कंड द्वारा संपादित और अनुवादित।

अलंकारशास्त्र (सौदर्यशास्त्र)

7. **रसगंगाधाराः** दो खंडों में प्रो. रामरंजन मुखर्जी द्वारा समालोचनात्मक ढंग से संपादित और अनुवादित।

संगीत

8. **नारद की संगीतमकरन्दा :** डॉ. एम. विजयलक्ष्मी द्वारा संपादित और अनुवादित।
9. **रागविबोध :** डॉ. रंगनायकी अय्यंगर द्वारा संपादित और अनुवादित

कुमारजीवा : दार्शनिक और द्रष्टा पर संगोष्ठी के अवसर पर साँस्कृतिक कार्यक्रम

दिल्ली प्रदर्शनी: एक जीवंत विरासत पर नामावली (कैटलॉग) के विमोचन के अवसर

कार्यक्रम 'ग' : कलासमालोचना श्रृंखला
(विवेचनात्मक छात्रवृत्ति और अनुसंधान के प्रकाशन की एक श्रृंखला)

श्रृंखला में कला और सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर विवेचनात्मक लेखन के प्रकाशन शामिल हैं। श्रृंखला का एक हिस्सा उन प्रख्यात विद्वानों के काम पर ध्यान केंद्रित करता है जिन्होंने मौलिक अवधारणाओं, चिह्नित सदाबहार स्रोतों पर विचार किया है और विविध परम्पराओं को निकट रखने के द्वारा संवादों के सेतु का निर्माण किया है। इन प्रकाशनों की कसौटी है उनके पार-साँस्कृतिक अभिज्ञता, बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण के लिए कार्यों के मूल्य और भाषा या मुद्रण से बाहर होने के कारणों से अप्राप्यता। श्रृंखला चयनित संख्या में लेखकों और उनके कामों के संशोधनों और विषय-क्षेत्र सम्बन्धी पुनः-व्यवस्थित संस्करणों पर चर्चा करती है। इस कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण अंश है लेखक के प्रामाणिक संशोधन के आधार पर डॉ. आनंद के. कुमारस्वामी के संग्रहीत कामों को पुनः प्रकाशित करना।

निम्नलिखित खण्ड प्रकाशन के विभिन्न चरणों में हैं:

1. प्रो. के.डी. गोस्वामी द्वारा सम्पादित और अनुवादित **इलस्ट्रेटेड बालीसत्र भागवत पुराण**
2. डॉ. उर्मिला शर्मा द्वारा सम्पादित **संगीत साहित्य दर्शनः कलेक्टेड ऐसे ऑफ ठाकुर जयदेव सिंह** (2 खण्ड में)
3. श्रीमती उर्मिला शर्मा द्वारा सम्पादित **उज्जवलनीलमणी ऑफ श्रीरूपागोस्वामी**
4. टेरेसा पाचेको पेरेरा और लोतिका वर्दराजन द्वारा सम्पादित **इंडो-पोर्तगीज़ इम्ब्रॉइड्रीज़ः आर्ट कॉन्टेस्ट हिस्ट्री**
5. श्री राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा स्वामी श्री हरीदास (1537-1632 ईसवी) का एकत्रित छंद **रास देशाः कमेंट्री ऑन केलीमाता**

दक्षिण पूर्वी एशियन अध्ययन

डॉ. बच्चन कुमार द्वारा सम्पादित पुस्तक 'आर्ट एण्ड आर्कलॉजी ऑफ साऊथ-ईस्ट एशिया' प्रकाशित की गई।

संगोष्ठियाँ/व्याख्यान

1. 7 अगस्त, 2010 को 'कलामुख टेम्पल ऑफ कर्नाटका' पर प्रो. पी. एस. फिल्योजड एवं डॉ. वसुंधरा फिल्योजड ने व्याख्यान दिए।
2. 6 जुलाई, 2010 को डॉ. टी. एन. धर्माधिकारी की अध्यक्षता में 'संस्कार का महत्व' पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

3. 26 से 29 जुलाई, 2010 को 'शेयर्ड कल्चरल हेरिटेज' पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।
4. 29 सितम्बर, 2010 को 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया। इसमें प्रसिद्ध कवि श्री अशोक शर्मा मुख्य अतिथि थे।
5. डॉ. निर्मला शर्मा द्वारा 'स्टडी एण्ड आईडेंटीफिकेशन ऑफ द आइक्नोग्राफी ऑफ द एलची' पर एक मल्टीमीडिया प्रस्तुती।
6. 1 नवम्बर, 2010 को 'केलिमाल' पर डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा एक व्याख्यान आयोजित किया गया।
7. 25 नवम्बर, 2010 को 'समरांगनासूत्रधार' पर प्रो. पी.पी. आप्टे द्वारा एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।
8. 13 दिसम्बर, 2010 को समरांगनासूत्रधार के संदर्भ में इंजीनियर अरविन्द फडनिस ने 'हाइड्रोलिक्स एरोनोटिक्स एण्ड मैकेनिक्स इन इंजीनियरिंग प्रेसपेक्टिव' पर एक व्याख्यान दिया।
9. डॉ. मन्दाक्रान्ता बोस ने 'एनशियन्ट संस्कृत टेक्सट्स: हाउ दे शेपड वूमन्स लाइवस?' पर एक चर्चा का आयोजन किया।
10. 3 से 5 फरवरी, 2010 को 'कुमारजीव: दार्शनिक एवं ऋषि' एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विभिन्न देशों के प्रसिद्ध विद्वानों ने प्रतिभागिता की और उन्होंने कुमारजीव के रिक्थ/पैतृक सम्पति एवं उनके जीवन पर अनुसन्धान प्रतिष्ठित किया। कुमारजीव के योगदान को उजागर करते हुए भारत-चीन साँस्कृतिक सम्बन्धों को समृद्ध करने के लिए इस संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

नई परियोजना

डॉ. शारदा देसाई ने 'भारतीय महिला मनीषियों के गीत' की एक परियोजना आरम्भ की।

इ॰गाँ॰रा॰क॰ केन्द्र के प्रकाशनों का बिक्रीपटल

इस वित्त वर्ष इ॰गाँ॰रा॰क॰ केन्द्र ने 2,25,398 रु. का प्रकाशनों की बिक्री की।

दृश्य कला एकक

दृश्य कला एकक की स्थापना अक्तूबर 2009 में हुई थी। इस परियोजना के मुख्य उद्देश्य महान कलाकारों के ऐतिहासिक महत्व की कृतियों के प्रलेखन कार्य, संग्रहालयी प्रदर्शनी

का आयोजन करना, अभिलेख हेतु दृश्य कला से सम्बन्धित स्रोतों की पहचान करना और दृश्य कला – पेंटिंग, मूर्तिकला ग्राफिक्स और फोटोग्राफी आदि के क्षेत्र में कार्यशाला, संगोष्ठी और व्याख्यान का आयोजन करता है।

इस एकक ने 4 से 8 नवम्बर, 2010 को रबीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्यिक कृतियों पर आधारित महान व्यक्तित्व के फिल्मकार द्वारा बनी फिल्म उत्सव का आयोजन किया। यह उत्सव टैगोर प्रसिद्ध कविता 'पुजारिनी' के अनुकलन 'नोटिर पूजा' से प्रारम्भ हुआ। इस नाटक का मंच रूपान्तरण स्वयं रबीन्द्रनाथ टैगोर ने 1926 में किया। उद्घाटन दिवस पर रे द्वारा टैगोर के वृतचित्र को दर्शाया गया।

तपन सिन्हा द्वारा निर्देशित खुदितो पाषाण में एक टैक्स कलक्टर की कहानी है जो मतिभ्रम का शिकार हो जाता है, जब वह एक निर्जन महल में रहता है। टैगोर की लघु कहानी से रूपान्तरित की गई अतिथि भी तपन सिन्हा द्वारा निर्देशित, एक किशोर की मार्मिक कहानी है जो स्वतंत्र होने के लिए तरसता है और बाद में स्वतंत्र कर दिया जाता है। फिल्म में टैगोर द्वारा रचित गीत है।

चिन्नापात्रों की भूमि में टैगोर के पत्रों के संग्रह पर आधारित है, जो उन्होने अपने उन दिनों के दौरान लिखे थे जब वह जमींदार थे। तब वह उनतीस वर्ष की आयु के थे। सैबल मित्रा द्वारा निर्देशित, इसमें पत्र एक आदमी की अधिक पीड़ा और परमआनन्द को प्रकट करते हैं, जो बहुत अधिक परिश्रम करके जीवन का एक पहला अनुभव प्राप्त करता है और अपनी पैतृक भूमि की समृद्धि को खोजता है।

कुमार शाहनी का चार अध्याय इला और अतीन्द्र की प्रेम कहानी में बुना राष्ट्रीय आंदोलन के कैनवास में रबीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा एक उपन्यास पर आधारित है। सत्यजीत रे द्वारा चारुलता, समाप्ति और मोनिहारा भी स्क्रीन की गई थी। दिखाए गए वृत्तचित्र थे: टैगोर की पेंटिंग, शान्तिनिकेतन, रबीन्द्रनाथ टैगोर: यूनिवर्सल मैन, टैगोर के प्रकृति के गीत और विश्वभारती।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा, आर्थिक-साँस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदाय की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोक विद्या तथा कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से सम्बन्धित है। मौखिक परम्पराओं पर केन्द्रित इस संभाग का कार्यपटल विभिन्न साँस्कृतिक दलों तथा समुदायों के बीच अन्तस्सम्बन्धों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। इस संभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित हैं: (क) मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह; (ख) बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ ; (ग) जीवन शैली अध्ययन, जिसे दो भागों में बाँटा गया है- 1. लोक परम्परा, 2. क्षेत्र सम्पदा।

कार्यक्रम 'क' : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह के अन्तर्गत अनुसन्धान विश्लेषण और प्रसार हेतु मौलिक संसाधन के रूप में मौलिक, पुनर्रुत्पादन और रिप्रोग्राफी फॉर्मेट अपेक्षित है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य पूरे किए गए।

अधिग्रहण:

पश्चिम बंगाल से स्क्रॉल पेंटिंग-33; संथालों की स्क्रॉल पेंटिंग-9; आंध्र प्रदेश से स्क्रॉल पेंटिंग-4; राजस्थान से मारवाड़ी कवाड्स (गतिशील पुण्यस्थानं)-2; उड़ीसा से दस्ताने कठपुतलियाँ-10, केरल से छाया कठपुतलियाँ-9, आंध्र प्रदेश से छाया कठपुतलियाँ-60 और पश्चिम बंगाल से गंभीर मुखौटा-7, पश्चिम बंगाल से पुरुलिया छो मुखौटा-5.

कार्यक्रम 'ख': बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ

आदि दृश्य

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव की मौलिक अवबोधन शक्तियों से उखूत कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। मानव को अपनी दृश्य एवं श्रव्य रूपी आद्य शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ।

शैलकला एवं उससे सम्बद्ध विषयों का प्रलेखन एवं अध्ययन

रॉक कला आदि दृस्या कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक निर्मित करती है। केंद्र इस परियोजना के लिए एक बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाता है। क्षेत्र प्रलेखन पुरातत्व नृविज्ञान, लोकगीत, सजातीय वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान, रसायन विज्ञान, आदि, जैसे विभिन्न विषयों के

विशेषज्ञों और सम्बन्धित क्षेत्रों/मंडलों के संस्थानों के साथ सहयोग से किया जाता है। परियोजना के उद्देश्य हैं: (i) वाचनिक, प्रासंगिक वीडियो और फोटो प्रलेखन बनाना (ii) पुरातात्विक अनुसंधान के लिए दूरदराज के इलाकों में लोगों के साथ संवाद बनाना, और सम्बन्धित लोकगीत और प्राकृतिक और मानव निर्मित सुविधाओं के प्रलेखन के आधार पर एक जैवसाँस्कृतिक नक्शा, रॉक कला परिदृश्य की एक मानसिक और पारिस्थितिक एटलस बनाना (iii) संरचनात्मक, पारिस्थितिक के लिए सुझाव बनाना, और, दुर्लभ मामलों में, अधिमानत: स्थानीय सामग्री और तकनीक का उपयोग कर, प्रत्यक्ष संरक्षण (iv) एक वीडियो और फोटो संग्रह का पुरालेख विकसित करना (v) क्षेत्र में वीडियो प्रलेखनों के आधार पर वृत्तचित्र बनाना (vi) प्रदर्शिनों (स्थायी, गतिशील, अस्थायी) का आयोजन करना (vii) प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों में प्रकाशनों को बाहर लाना। परियोजना के तहत इस वर्ष डेटा का समेकन निम्नानुसार किया गया है:

* आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के क्षेत्र के डेटा की 1033 तस्वीरों का फोटो विवरण और कप्यूटरीकरण किया गया।
* झारखंड से 913 तस्वीरों के मैनुअल अभिगमन।
* लद्दाख से सर्वर में अपलोड करने के लिए 2079 तस्वीरों का मैनुअल और डिजिटल अभिगमन।
* लद्दाख की सूची (इंवेंटरी) के लिए पहला मसौदा तैयार किया गया था।
* सूची (इंवेंटरी) के लिए जीपीएस क्षेत्र डेटा से लद्दाख और राजस्थान के 60 मानचित्र पुन:-उत्पादित किए।
* छत्तीसगढ़ की रॉक कला पर डीवीडी की तैयारी के लिए ड्राफ्ट डोप पत्रक तैयार की गई।
* रॉक कला पर आगामी अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के लिए कुछ पृष्ठभूमि कार्य की तैयारी (राष्ट्रीय और विदेशी विद्वानों की सूची, प्रदर्शनी पर अवधारणा नोट, आदि तैयार किए)। फ़ील्ड डेटा समेकन के अलावा, 2012-13 में प्रस्तावित रॉक कला पर मेगा आयोजन का अवधारणा पत्र और संसाधन व्यक्तियों की सूची तैयार की गई है।

आदि श्रव्य

एमयूआरएआई - प्रदर्शन का अधिकार

यह परियोजना तमिलनाडु के हिंदू मंदिरों के अंदर और बाहर मेलक्कारार के वंशानुगत समुदाय द्वारा किए जाने वाले प्रदर्शन नृत्य और संगीत के विकास और अनुसंधान के लिए एक

परियोजना है। 7 दिसंबर, 2010 को परियोजना निदेशक सास्किया करसेनबॉम प्रारंभिक कार्यशाला और सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किया गया था। क्षेत्र कार्य शुरू किया जा चुका है।

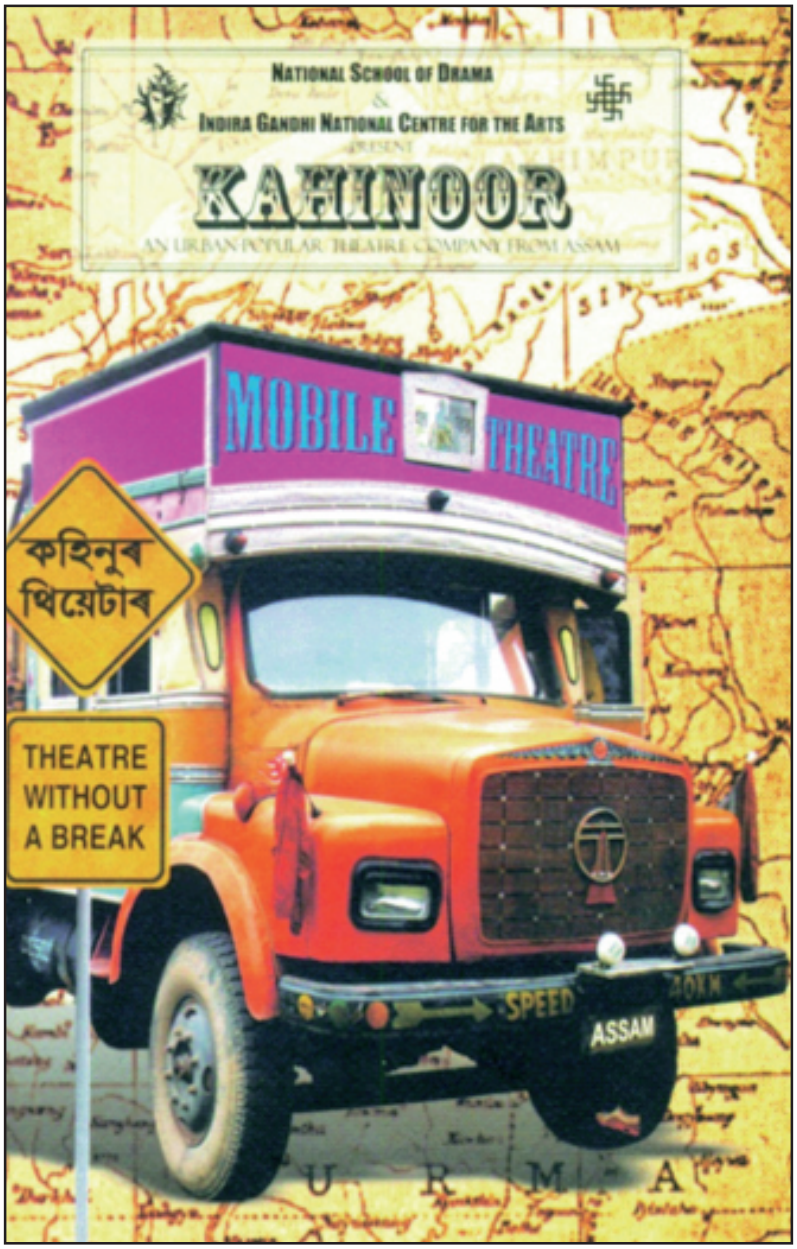

कोहिनूर रंगमंच

उत्तर-पूर्व से रंगमंच

कार्यक्रम 'ग' : जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया जाता है। यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र हैं।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक- साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती है। वर्ष 2010-2011 में निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रारम्भ हुईः

इस्लामी विरासत

सुश्री नूर जहीर द्वारा 'इकोज फ्रॉम द हार्टः एक अंग्रेजी पद्यसंग्रह (एंथोलॉजी) लेखन उर्दू में तथा कम ज्ञात मुस्लिम महिला लेखकों द्वारा (1920-1925)' परियोजना प्रारम्भ की गई।

'अरबी मलयालमः केरल के माप्पीला मुसलमानों की भाषाई-साँस्कृतिक परंपराएँ' का प्रलेखन इस्लामी विरासत कार्यक्रम में जनपद सम्पदा के अधययनों के अंश के रूप में किया जा रहा है।

आख्यान

मुखौटों, कठपुतलियों और फड़ कथाओं का भारत की साँस्कृतिक सांचे में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने 20 अक्टूबर से 20 नवम्बर 2010 तक एक विशाल कार्यक्रम 'आख्यान–भारत के मुखौटे, कठपुतलियों, और पिक्चर शोमैन परम्परा का उत्सव' आयोजित किया। इस विशाल कार्यक्रम के दौरान मंच प्रदर्शन, जुलूस, निपुण कारीगरों और कलाकारों द्वारा प्रदर्शन, एक सार्वजनिक व्याख्यान माला और एक प्रदर्शनी का आयोजन किए गए।

इस त्यौहार का उद्देश्य था बोलने वाली वस्तुओं के एक समुच्चय के माध्यम से गूढ़ार्थ किए गए विविध अर्थों का पता लगाना; अर्थ जो मनमाने ढंग से हैं, तब भी सुसंगत हैं; अर्थ जो सामाजिक और साथ ही राजनीतिक क्षेत्रों में सन्निहित हैं; अर्थ जो भारत की बहुल सँस्कृतियों से सम्बन्धित ''आत्म''/''स्वयं'' के अनवरत निर्माण और पुनर्निर्माण के माध्यम से विभिन्न परंपराओं से व्युत्पन्न है। मुखौटे, कठपुतलियाँ, और पिक्चर स्क्रॉल ऐसी तीन गल्प सम्बन्धी परम्पराएँ हैं जिनमें मानव एजेंसी ''निर्जीव वस्तुओं'' के साथ विशिष्ट प्रकार के सम्बन्धों में विद्यमान रहती है, जहाँ छुपाव और प्रकटन हाथ में हाथ डाले, अर्थ की बहुलता बनाते हुए चलता है।

आयोजित किए गए सार्वजनिक व्याख्यान थे:

1. मुखौटे बेनकाब, कठपुतलियाँ निर्जीव और जीवित, कहानियों के अन्दर कहानियाँ' डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन द्वारा (अक्टूबर 26);
2. फिल्म 'मेकर्स ऑफ टेल्स', 'राजस्थान की कावड़ परम्परा' तदोपरान्त डॉ. नीना सबनानी द्वारा व्याख्यान (अक्टूबर 27);
3. 'एक आधुनिक व्यवसायी की नज़र से: भारतीय कठपुतली के पारम्परिक और आधुनिक रूप' श्री दादी डी पदमजी द्वारा (अक्टूबर 28);
4. 'भारतीय पिक्चर शोमैन: परम्परा और रूपांतरण' प्रो. ज्योतीन्द्र जैन द्वारा (अक्टूबर 29);
5. 'चौकन्ने शैतान, मुखौटे वाले देवता: उड़ीसा का प्रब्लादा नताका' प्रो. जॉन ऐमिघ द्वारा (अक्टूबर 30)।

आख्यान प्रदर्शनी ने दृश्य प्रस्तुति के लिए सभी तीनों रूपों, यथा, मुखौटे, कठपुतलियों और पिक्चर शोमैन को कड़ीबद्ध करने का प्रयास किया। तीन रूपों, प्रत्येक चार वर्गों में विभाजित–'महाकाव्य', 'पवित्र और अनुष्ठान', 'रोमांस और गाथागीत' तथा 'समकालीन अभिव्यक्तियाँ'–को, संग्रहालय टुकड़ों के रूप में नहीं प्रस्तुत, बल्कि भारत की साँस्कृतिक परम्पराओं की प्रदर्शन की जाने वाली कलाओं और शिल्पों के रूप में, प्रस्तुत किया गया।

20 से 29 अक्टूबर से, दस कठपुतली और नौ मुखौटा प्रदर्शन मंचन किए गए थे जिन्होंने क्षेत्रीय किंवदंतियों और गाथागीतों के साथ साथ रामायण, महाभारत और पुराणों की महाकाव्य दुनियाँ से खींचे गए समृद्ध खज़ाने को चित्रित किया। यक्षगान (धागा बँधी कठपुतलियाँ) शैली में चूड़ामणि, टोलु बोम्मालत्ता में सुन्दर कांड, (छाया कठपुतलियाँ) जैसे प्रदर्शनों से लेकर, दादी पदमजी द्वारा कल्पतरु (इच्छा पूर्ति करने वाला वृक्ष) जैसे कठपुतली के समकालीन रूप तक फैले प्रदर्शन, इन्होंने भारत की कठपुतली परम्परा के सतत और सदैव विकसित होते रूप पर प्रकाश डाला है। सरायकेला और पुरुलिया के छाऊ, अरुणाचल प्रदेश के आजी ल्हामू, उत्तराखंड के रम्मन और तमिलनाडु के कलिअट्टम मुखौटा नृत्य रूपों ने भारत के विषयवस्तु की दृष्टि से विविध और समृद्ध दृश्य कथा परंपराओं को प्रस्तुत किया।

सिंटू नृत्य (हिमाचल प्रदेश), हिल जात्रा (पिथौरागढ़), रम्मन (गढ़वाल), पुली कलि (केरल), कुम्माट्टिकलि (केरल), छाऊ, कलिअट्टम (तमिलनाडु), अंकिया नट (असम) और मुखा भाओना (असम) जैसी भारत की विभिन्न मुखौटा परम्पराओं से कलाकारों ने जलूसों में भाग लिया जो उत्सव का एक प्रमुख हिस्सा बनी। विभिन्न मास्क बनाना, कठपुतली बनाना और गंभीर मास्क (पश्चिम बंगाल), बेनीर पुतुल नाच (पश्चिम बंगाल), पटम कथा (आंध्र प्रदेश), फड़ (राजस्थान), इत्यादि जैसी भारत की स्क्रॉल पेंटिंग परम्पराओं का निपुण कारीगरों द्वारा प्रदर्शन उत्सव का एक अन्य घटक था।

महाभारत की जीवंत परंपरा

10 फरवरी से 10 मार्च, 2011 तक 'जय उत्सव: महाभारत की जीवंत परम्पराओं को मनाना' आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम ने अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, साहित्यिक पठनों, प्रदर्शनों, अनुष्ठान प्रदर्शनों, प्रदर्शनी, फिल्म शो और एक पुस्तक मेले को शामिल करते हुए कार्यक्रमों की एक श्रृंखला के माध्यम से महाभारत की जीवंत परम्पराओं की खोज की गई।

जय उत्सव: चक्रव्यूह

10 से 16 फरवरी, 2011 तक हुई महाभारत की जीवंत परम्परा पर अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भारत और विदेश से कई विद्वानों लेखकों को व्यस्त रखा, कई मुद्दों पर की चर्चा की गई जैसे कि 'महाभारत और क्षेत्रीय विविधताएँ,' 'महाभारत और पवित्र भूगोल, 'महाभारत के पात्र और क्षेत्रीय पहचान', 'आख्यान और उपाख्यान', अनुष्ठान और प्रदर्शन में महाभारत,' 'दृश्य कथानकों में महाभारत,' और 'महाभारत में नैतिक दुविधाएँ'।

साहित्यिक संध्या सत्र 18, 20, 22 और 24, 2011 फरवरी को आयोजित की गई थी। महाभारत से जीवित कहानियों को लाते हुए और साथ ही यह दिखाते हुए कि कैसे उनकी गूँज ने भारत की विभिन्न भाषाओं के लेखकों की कल्पना भरी, अन्यों के साथ गिरीश कर्नाड की ययाति, रबीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रांगदा, अयप्पा पानिकर की कुरुक्षेत्रम, धर्मवीर भारती की अंधा युग जैसी चयनित पठन प्रस्तुतियाँ की गई, विभिन्न भारतीय भाषाओं से प्रख्यात कवियों और लेखकों जैसे प्रतिभा रे (उड़िया में),

के. सच्चिदानन्दन (मलयालम में) और कुंवर नारायण (हिन्दी में) ने अपने रचनात्मक लेखन से अंग्रेजी अनुवाद में साहित्यिक पठन प्रस्तुत किया और यह भी बताया की कैसे महभारत उनका स्रोत बना रहा है। नमिता गोखले, बच्चों के लिए पफ्फिन महाभारत की लेखिका ने अपनी पुस्तक जया, विजय के गीत से कुछ कहानियाँ पढ़ीं। पूजा पाण्डे, बच्चों की एक अन्य कथाकार ने महाभारत से कहानियों की अपनी

व्याख्या दी। साहित्यिक संध्याएँ पवन वर्मा और गुलजार द्वारा पवन वर्मा की अंग्रेजी में कविता युधिष्ठिर और द्रौपदी से चयनित पदो के पठन और गुलजार द्वारा इसके उर्दू/ हिंदी अनुवाद के साथ संपन्न हुई।

साँस्कृतिक प्रदर्शन

देश के सभी भागों से कलाकारों और मंडलियों की एक अद्भुत श्रृंखला ने

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के मंच और मैदान पर 10 से 24 फरवरी 2011 तक प्रदर्शन किया। मंच प्रदर्शनों का आरम्भ केरल से पद्मश्री कलामंडलम गोपी द्वारा एक कथकली प्रस्तुतीकरण के साथ हुआ। भारतीय थिएटर और प्रदर्शन परम्पराओं के विशाल खज़ाने से से महाभारत के विभिन्न एपिसोड का चित्रण करने वाले सुरभि थिएटर समूह द्वारा माया बाजार, छाऊ नृत्य, भामा कलपम (आंध्र नाटियम) जैसे प्रदर्शनों की श्रृंखला के पश्चात् मंच प्रदर्शन का समापन मणिपुर नाटकीय संघ द्वारा अभिनीत ''अभिमन्यु'' कार्यक्रम के साथ हुआ। भारत के सभी भागों से भाट सम्बन्धी गायक, मार्शल आर्ट कलाकार और संगीतकार एक साथ आए और उन्होंने अपने ऊर्जावान और जोशपूर्ण प्रदर्शन से

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ परिसर को जीवंत बना दिया था। मेवात जोगी (राजस्थान), नारदीय कीर्तन (महाराष्ट्र), हरि कथा (आंध्र प्रदेश), विल्लू पाटु (तमिलनाडु), मुसाधा (हिमाचल प्रदेश) और व्यासगोआ ओजापाली (असम) जैसे भाट सम्बन्धी गायकों ने अपनी परम्पराओं के अद्वितीय मोहक

गीतों की प्रस्तुति की। दर्शकों के लिए दावत, कलारिपायाट्टु (केरल), गटका (पंजाब), सिलमबट्टम (तमिलनाडु) और पाइका नृत्य (उड़ीसा) जैसी मार्शल कला मंडलियों ने आश्चर्यजनक प्रदर्शन किया। ढोल और तुरही के साथ, तमिलनाडु (जिकाट्टम) और केरल (पंचवाद्यम) से संगीतकारों ने केरल से वेलाकली तथा अर्जुनानृथम कलाकारों को संगीतमय संगत प्रदान की। पाण्डव नृत्य (गढ़वाल), गेंदा गरुड़ (गढ़वाल), व्यूह (उत्तराखंड), कमल व्यूह (उत्तराखंड) और ठोडा (हिमाचल प्रदेश) से अभिनीत अंश भी दिखाए गए।

महाभारत के साथ जुड़े विश्वासों के सम्बन्ध में पवित्र अनुष्ठानों का प्रदर्शन इस उत्सव का एक महत्वपूर्ण घटक था। अरावन उत्सव (तमिलनाडु) जिसमें विपरीत लिंगियों के बीच अनुष्ठान की एक श्रृंखला शामिल है, द्रौपदी अम्मान उत्सव (आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु), महाभारत प्रबचन (असम) और अग्नि नृत्य (राजस्थान) ने जय उत्सव की विषय-वस्तु को और बढ़ाया।

निपुण शिल्पकार कार्यशाला: शिल्पकारों और चित्रकारों ने अपनी सम्बन्धित पारम्परिक कलाओं में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। हिमाचल प्रदेश का चंबा रूमाल और लघु चित्रकला, मध्यप्रदेश की गोंड चित्रकारी, बिहार की मधुबनी चित्रकारी, आंध्र प्रदेश के नकाशी गुड़िया निर्माता और पट्टम कथा, और उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल की पट चित्र, ने महाकाव्य के सम्बन्ध में उनकी कला की कलात्मक प्रेरणा पर प्रकाश डाला।

चलचित्र: उत्सव के दौरान भारत और विदेशों से फिल्मों, वृत्तचित्रों, एनीमेशन फिल्मों, नृत्य नाटकों और महाभारत के टीवी रूपांतरों का प्रदर्शन किया गया। प्रख्यात फिल्म निर्माताओं के साथ विचार-विमर्श और संवाद के साथ-साथ फ्रांज ऑस्टेन, श्याम बेनेगल, के. वी. रेस्त्री, पीटर ब्रूक और अन्य लोगों के कार्यों का प्रदर्शन किया गया था।

साहित्य निधि: एक पुस्तक प्रदर्शनी में इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के कलानिधि और साहित्य अकादमी पुस्तकालय, संगीत नाटक अकादमी पुस्तकालय, और ईरानी संस्कृति केन्द्र सहित विभिन्न पुस्तकालयों से पुस्तक प्रदर्शनी प्रदर्शित की गयी।

एक फूड कोर्ट **भीम की रसोई** ने द्रौपदी की खीर, कुंती के चावल, हस्तिनापुर की चाट, आदि जैसे अपने स्वादिष्ट भोजन आइटम्स की श्रृंखला के साथ आगंतुकों के खान-पान का प्रबन्ध किया।

इस उत्सव का एक अन्य आकर्षण 'पवित्र भूगोल और सौंदर्यशास्त्र अभिव्यक्तियाँ' की प्रदर्शनी था। इसने महाभारत के साथ जुड़े कथनों, मिथकों, किंवदंतियों के साथ विकसित पवित्र परिदृश्य की एक झलक प्रदान की थी जिन्हें आगे जा कर मंदिरों और धार्मिक स्थलों में मूर्तरूप दिया गया; अनुष्ठान, गीत, नृत्य और नाटक में साकार किया गया; मेलों और उत्सवों में मनाया गया; महाभारत के कई रूपों में से एक रूप में एक पीढ़ी से दूसरे में संचारित किया गया, जो तस्वीरों, नक्शों, चित्रावलियों, पेंटिंग्स, कैलेंडर कलाओं, नृवंशविज्ञान वस्तुओं और संस्थापनाओं के माध्यम से एकतत्वता में रहते और धड़कते हैं।

गढ़वाल, हिमाचल प्रदेश, महाबलीपुरम और केरल में महाभारत परम्पराओं के प्रलेखन शुरू किए जा चुके हैं। केरल में दुर्योधन मंदिर का क्षेत्र अध्ययन तथा दृश्य-श्रव्य प्रलेखन किया जा चुका है।

रामकथा की मौखिक परम्परा

छत्तीसगढ़ी रामकथा का प्रलेखन किया गया था।

उभरते हुए अनुष्ठान क्षेत्र और परिवर्तित होते हुए शहरी परिदृश्य

यह परियोजना राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में काँवड़िया, छठ पूजा और दुर्गा पूजा के संदर्भ में, गतिशीलता, पहचान, और अनुष्ठान की गतिकी के मुद्दों पर संकेंद्रित करती है। कांवरिया और छठ पूजा के क्षेत्र डेटा संग्रह और दृश्य-श्रव्य का प्रलेखन किए गए थे।

रम्मन: गढ़वाल के अनुष्ठान रंगमंच

इस क्षेत्र में क्षेत्र अध्ययन आयोजित किया गया था और रिपोर्ट तैयार की गयी।

आदिवासी लोक कला और तुलसी साहित्य, अकादमी, भोपाल में लोकरंग उत्सव -2011 (26 जनवरी - 2 फरवरी, 2011)के दौरान मुखौटा पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका शीर्षक 'प्रतिरूप' था।

कोहिनूर रंगमंच उत्सव

कोहिनूर असम में एक गतिशील रंगमंच कंपनी है। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली के सहयोग से, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने 25 से 29 अप्रैल 2010 तक एक रंगमंच उत्सव की मेजबानी की। समूह ने निम्नलिखित नाटकों को प्रस्तुत किया: असीमत जर हेरल सीमा; ओ' मोई मुन्नाई कोईसु; शीतारे सेमेका राति। प्रदर्शन के समय पर ही असम के गतिशील रंगमंच के इतिहास पर एक फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी।

तीज-वार्षिक दिवस

जनपद सम्पदा प्रभाग का वार्षिक दिवस तीज पर मनाया जाता है। इस वर्ष यह 12 अगस्त 2010 को पड़ा। डॉ. नमन आहूजा ने 'क्या कोई चीज एक ही समय में लोकप्रिय, क्लासिकल, प्राचीन, और बड़े पैमाने पर उत्पन्न की जा सकती है?प्रारंभिक भारतीय टेराकोटा के इतिहास-लेखन में समस्या' विषय पर एक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर 'भारतीय टेराकोटा की कला' शीर्षक पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। साँस्कृतिक कार्यक्रम के अंश के रूप में हरयाणवी लोक गीतों और नृत्यों को प्रस्तुत किया गया था।

चलचित्र

प्रभाग द्वारा निम्नलिखित फिल्में तैयार की गयी थी:

1. हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाएँ, अर्थात्, चंबा जिले की आँचली शिव गाथा (सवीन) और मंडी जिले की जेडे लोक गाथा (हिमाचल कला संस्कृति और भाषा अकादमी, शिमला के साथ सहयोग से), का प्रलेखन।

निम्नलिखित फिल्मों के रफ कट प्राप्त हुए थे:

1. बरेली की कस्बाई संस्कृति (नावेद अख्तर द्वारा निर्देशित);
2. उत्तर भारत की कस्बाई या नगर संस्कृति 'बिलग्राम' पर एक प्रलेखित फिल्म श्रृंखला; (यूसुफ सईद द्वारा निर्देशित);
3. कुमाऊंनी रामलीला परम्परा ओपे-राम(हिमांशु जोशी द्वारा निर्देशित) का प्रलेखन;
4. हिमाचल प्रदेश की वृत्तचित्र फिल्में ट्राइबल्स (रेणु नेगी द्वारा निर्देशित)

क्षेत्र सम्पदा

क्षेत्र सम्पदा किसी विशिष्ट स्थान या मंदिर और इसकी इकाइयों और इसके आसपास के लोगों की संस्कृति पर इसका प्रभाव, किसी विशिष्ट केन्द्र के, भक्तिपूर्ण, कलात्मक, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं का सम्पूर्ण अन्तग्रर्थन और इसके नवीकरण और निरंतरता के रूप में कौन से कारक कार्य करते हैं, की परिकल्पना करता है। इस परियोजना के तहत निम्नलिखित पहलें की गई थी:

1. बृहदेश्वर मंदिर: आर नागास्वामी द्वारा फॉर्म एण्ड मीनिंग का विमोचन किया गया था।
2. पी. आर. जी. माथुर द्वारा सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द गुरुवयूर टेंपल का विमोचन किया गया था। गुरूवायूर, केरल में बाद में 22 अप्रैल 2010 को पश्चातकथित पुस्तक के विमोचन के अवसर पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई थी। यह आयोजन मानव विज्ञान अध्ययन के लिए एल. के. अनन्तकृष्णा अय्यर अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र (एआईसीएएस), पलक्कड़, केरल के साथ सहयोग में आयोजित किया गया था।
3. पी. आर. जी. माथुर द्वारा सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द सबरीमाला अयप्पा टेंपल पर परियोजना की अंतरिम रिपोर्ट प्राप्त हुई थी।

पूर्वोत्तर भारत, अध्ययन कार्यक्रम

इस वर्ष निम्न अनुसंधान परियोजनाओं को लिया गया था:

1. आईआईटी, गुवाहाटी के साथ सहयोग से 'असम और मणिपुर में ब्रह्मपुत्र घाटी और बराक घाटी के लिए विशेष संदर्भ के साथ पूर्वोत्तर भारत की इस्लामी विरासत'
2. आईआईटी, गुवाहाटी के साथ सहयोग से 'पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव पुनर्जागरण की पुन:चर्चा'
3. जेएनयू के साथ सहयोग से 'सौंदर्यशास्त्र और नैतिक दुनियाओं में महिला: पूर्वोत्तर भारत में पारम्परिक दुनिया के विचार और समुदायों की संस्थागत प्रथाओं को खोजना'।
4. सिक्किम अकादमी, सिक्किम के साथ सहयोग से 'सिक्किम शिल्प परंपरा'।
5. प्रो. लोकेन्द्र आरम्बम, मणिपुर के साथ सहयोग से पूर्वोत्तर की महिला चारणों का प्रलेखन तथा युवा पीढ़ी के लिए लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम।

6. 'हावी होती आधुनिकता: औपनिवेशिक असम में बॉन्गीत और राष्ट्रवाद/ उप-राष्ट्रवाद की बनावट को जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा किया जा रहा है।

संगोष्ठी/कार्यशाला:

7. नवम्बर 2010 में जनजातीय अध्ययन संस्थान, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से ईटानगर में विश्वविद्यालय परिसर में 'अरुणाचल प्रदेश की अलिखित और लुप्तप्राय भाषाओं की स्थिति' पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-संगोष्ठी आयोजित की गई थी।
8. अन्वेषा, गुवाहाटी के सहयोग से 'पूर्वोत्तर की भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से बच्चों के लिए कार्यशाला-सह-पुस्तकों का विकास' आयोजित की गयी थी।

रंगमंच महोत्सव

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ और श्रीमंत शंकरदेवा कलाक्षेत्र, गुवाहाटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'पूर्वोत्तर भारत का स्वदेशी रंगमंच महोत्सव' देश में अपनी तरह का पहला था जहाँ रंगमंच, प्राचीन अनुष्ठान नाटकों और आद्य-नाट्य स्वरूपों को जनता, संस्कृति विशेषज्ञों का ध्यान आधुनिकीकरण के मद्देनजर साँस्कृतिक रूपों को महत्वपूर्ण हानि पर प्रश्नचिह्न लगाने हेतु आकर्षित करने और पूर्वोत्तर भारत में साँस्कृतिक बहस के गठन के लिए योगदान देने वाले देशी कलाकारों के समग्र सशक्तिकरण के लिए उपायों को खोजने हेतु सार्वजनिक दायरे में बाहर लाया गया था।

उत्सव का पूर्वोत्तर अध्याय 18 मार्च, 2011 को तेजपुर में आरम्भ हुआ उसके पश्चात् ईटानगर, शिलांग, और सिक्किम में आठ नाटकों की श्रृंखला का प्रदर्शन किया गया। पूर्वोत्तर अध्याय 20 मार्च, 2011 को सिक्किम में संपन्न हुआ। 23 से 28 मार्च, 2011 श्रीमंत शंकरदेवा कलाक्षेत्र, गुवाहाटी द्वारा मेजबानी किए गए गुवाहाटी अध्याय में सभी सोलह प्रदर्शनों का मंचन किया गया।

अमूर्त साँस्कृतिक विरासत

यूनेस्को की अमूर्त साँस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची के नामांकन के लिए 'गद्दी रिचुअल फेयर्स एण्ड फेस्टिवल्स' पर डोजियर प्रस्तुत किया गया।

यूनेस्को के लिए फिल्म

मौली कौशल द्वारा निर्देशित **गद्दी रिचुअल फेयर्स एण्ड फेस्टिवल्स** पर फिल्म बनायी गयी।

प्रकाशन

1. आर. नागास्वामी द्वारा बृहदेश्वर मंदिर: फॉर्म एण्ड मीनिंग
2. ए. के. डांडा द्वारा चिकित्सकीय नृविज्ञान पर
3. ए. के. डांडा द्वारा पर्यावरण मुद्दे और अन्य निबंध
4. पी. आर. जी. माथुर द्वारा सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द गुरूवायूर टेंपल।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्य कलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभाग ने अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की एक अतुलनीय शैली प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है। इस विभाग के अन्तर्गत डायस्पोरा साँस्कृतिक कार्यक्रम एवं बच्चों के लिए बाल जगत के कार्यक्रम आते हैं।

प्रदर्शनियाँ

1. **राजा दीन दयालः इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के स्टूडियो से संग्रहीत प्रदर्शनी** का आयोजन 19 नवम्बर, 2010 से 28 फरवरी 2011 तक किया गया। केन्द्र के अभिसलेखागार से 2857 ग्लास प्लेट नेगेटिव से 200 से अधिक छाया चित्रों पुनः निर्मित कर प्रदर्शित किया गया।

2. **'द कॉल ऑफ इण्डिया': एलिजाबेथ सास ब्रूनर एवं एलिजाबेथ ब्रूनर ने केन्द्र के अभिलेखागार से चुनिन्दा चित्रकलाओं एवं प्रलेखनों की प्रदर्शनी लगाई।** हंगेरिन चित्रकार एवं उनकी सुपुत्री एलिजाबेथ सास ब्रूनर जिन्होंने भारत को अपना घर बनाया एलिजाबेथ ब्रूनर के जन्म शताब्दी के स्मरणोत्सव पर 30 अप्रैल से 31 मई 2010 को एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। उनकी पेंटिंग्स के अलावा, उनके जीवन और हंगरी, इटली, शान्तिनिकेतन, बड़ौदा, नैनीताल और भारत में कुछ तीर्थ केंद्रों में रहने को आवृत्त करती हुई तस्वीरें, और दस्तावेज भी हंगरी सूचना और साँस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से आयोजित की गई, प्रदर्शनी में रखी गई थीं।

3. लॉरिस मालगुजी के दर्शन पर आधारित अवधारणा **'द स्ट्रोक्स ऑफ जीनियस',** ने आरम्भिक बचपन के रुझान और मुद्दों को प्रस्तुत किया। सलवान पब्लिक स्कूल के सहयोग से 6 से 30 अप्रैल, 2010 को इस प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया।

4. **'कॉल ऑफ द टाइगर'**– वाईल्डलाइफ सेवर्स सोसाइटी, मेरठ के सहयोग से 20 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 2010 को छायाकंन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध तालों से लिए गए लगभग 60 फोटोग्राफ्स के फ्रेमों को दर्शाया गया।

5. **दिल्ली-एक धरोहर शहर (दिल्ली-ए हेरीटेज सिटी)** ने अपने स्मारकों, प्राकृतिक दृश्यों, बाजारों और हवेलियों को चित्रित करते हुए दिल्ली के गहन साँस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। 20 अक्टूबर, 2010 से 28 फरवरी, 2011 आई.एन.टी.

ए.सी.एच. के दिल्ली अध्याय के सहयोग में आयोजित, इसने कला, वास्तुकला, और लोगों के चित्रण के माध्यम से दिल्ली की भावना, इसकी उदार और गहरी साँस्कृतिक विरासत को दिखाया। पैनलों, मॉडलों और चित्रावली का उपयोग करने के अलावा, प्रदर्शनी ने संवाद करने के लिए संवादात्मक किओस्क, प्लाज्मा पटल और ऑडियो दृश्यों को रखा। प्रदर्शनी का सूचीपत्र दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के द्वारा विमोचित किया गया था।

6. 3 से 7 दिसम्बर, 2010 को एम्बेसी ऑफ द पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के सम्बन्धों की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक प्रदर्शनी **'चाईना केलिग्राफी एण्ड आर्ट फॉर वर्ल्ड पीस'** का आयोजन किया।

7. **'फ्रीडम टू मार्चः रिकवरिंग गाँधी थ्रू दांडी'** विषयक प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 12 से 24 जनवरी, 2011 को महात्मा गाँधी के नमक आंदोलन से प्रेरित बहुप्रसिद्ध भारतीय कलाकारों के कलात्मक कार्यों को प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शन की श्रृंखला में संस्थापना, वीडियो कला, मूर्तियाँ, तस्वीरें और पेंटिंग शामिल थे। प्रदर्शनी ओजस कला के सहयोग से आयोजित की गई थी।

कार्यशालाएं/संगोष्ठी/सम्मेलन

8. हंगेरियन इन्फोर्मेशन एण्ड कल्चरल सेन्टर के सहयोग से 'एलिजाबेथ सास ब्रूनर एण्ड एलिजाबेथ ब्रूनरः टू हंगेरियन लाइव्स डिवोटिड टू इंडिया' एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 3 से 4 मई 2010 किया गया।

9. एन.ई.टी.पी.ए.सी. की 20वीं वर्षगांठ स्मरणोत्सव पर केन्द्र ने 'कल्चर एण्ड पोलिटिक्स ऑफ एशियन सिनेमा' एक अन्तर्राष्ट्रीय सभा का आयोजन 19 से 22 अगस्त, 2010 को किया। सम्मेलन ने भारत और विदेशों की फिल्मों का प्रदर्शन देखा।

10. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ एवं क्रास कल्चरल कंजर्वेशन ग्रुप के सहयोग से

    'इंडिया–सेल्फ इमेज एण्ड काउंटर ईमेज' पर दिनांक 27 से 30 दिसम्बर, 2010 को एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा का मुख्य उद्देश्य तत्कालिक मानवीय सोसाइटी की अभिरुचियों एवं तार्किता पर अन्देषण करना था।

11. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ एवं ओजस आर्ट, दिल्ली द्वारा दिनांक 19 जनवरी, 2011 को 'इम्पेक्ट ऑफ गाँधी ऑन इंडियन आर्ट एण्ड कल्चरल प्रेक्टिस' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'पौराणिक कथाओं के लिए मार्ग' पर एक पैनल चर्चा भी थी जिसके दौरान प्रतिभागियों ने डांडी मार्च और यह कैसे सामाजिक–साँस्कृतिक ताने–बाने और सौंदर्य को प्रभावित करता है के साथ जुड़ी कहानियों के बारे में अपने अनुभवों और विचारों को साझा किया।

12. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ एवं भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार की सहभागिता से 'राजनीति, दार्शनिक एवं सौन्दर्यशास्त्र' पर दिनांक 11 से 12 मार्च, 2011 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

व्याख्यान

13. प्रोफेसर निकोलस मिर्जोएफ, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय से प्रसिद्ध कला इतिहासकार और साँस्कृतिक समालोचक, ने 14 दिसंबर 2010 को 'आधुनिकता और जलवायु परिवर्तन: विसर्जन का सौंदर्यशास्त्र' पर एक व्याख्यान दिया। यह इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ द्वारा कला एवं सौंदर्यशास्त्र विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से आयोजित किया गया था।

14. 21 फरवरी, 2011 को सुश्री साशा लीमा, पुर्तगाल में पक्षियों के अध्ययन के लिए समिति की संस्थापक सदस्या, ने 'पुर्तगाली टाइलें: ग्टप्वीं से ग्वीं सदी तक –एक सिनोग्राफिक प्रदर्शन' पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

फिल्म स्क्रीनिंग

15. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में 24 सितम्बर, 2010 को डॉ. वी. एलविन की 'एन्ज़ेल ऑफ द एबोरिजिनल्स: डॉ. वी. एलविन' की 45 मिनट का वृत्तचित्र दिखाया गया। बिस्वजीत बोरा द्वारा वृत्तचित्र ने एक प्रसिद्ध ब्रिटिश नृविज्ञानी, मानवजाति विज्ञानी, और भारतीय आदिवासी जीवन शैली और संस्कृति पर विशेषज्ञ के बहुआयामी जीवन और कार्यों को दिखाया है।

अन्य गतिविधियाँ

16. 17 से 18 अप्रैल, 2010 को 'उत्तर–पूर्व की झलकियाँ' के रूप में असम की रंगोली बीहू उत्सव के रूप में मनाया गया।

17. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ एवं वीणा फाउंडेशन, नई दिल्ली के सहयोग से 'वीणा नवरात्रि 2010' का आयोजन किया गया, इसका मुख्य उद्देश्य भारत के उत्तरी एवं दक्षिण क्षेत्र में वीणा वादन के पुरानी परम्परा को कायम रखना था। यहाँ पर कुछ परम्पराएँ जैसे सरस्वती वीणा, रूद्र वीणा, विचित्र वीणा एवं चित्र वीणा प्रचलित हैं। ये गतिविधियाँ चैन्नई, बंगलुरु, हैदराबाद, तिरुवन्तपुरम, कम्बोडिया, मुम्बई एवं हिमाचल प्रदेश एवं अन्तर्राष्ट्रीय आस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर मलेशिया, यूरोप, लंदन एवं यूएसए में आयोजित की गईं।

18. भारतीय साँस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् की 60वीं वर्षगांठ एवं आई.सी.सी.आर. के स्थापक की 122वीं वर्षगांठ के अवसर पर 18वाँ अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य एवं संगीत विद्यार्थी उत्सव 'फ्रेंडशिप थ्रू कल्चर' कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 12 नवम्बर, 2010 को आयोजित किया गया।

19. सुप्रसिद्ध पाकिस्तानी सूफी गायिका आबिदा परवीन ने दिनांक 13 नवम्बर, 2010 को संगीतमय शाम प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम को बहुत लोगों ने प्रसन्द किया। कथक केन्द्र की गीताजंली लाल ने नृत्य कला कथक 'आत्मा' का प्रदर्शन किया। इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰, आई.सी.सी.आर. एवं इंडियन वूमेंनस प्रेस कोरप्स एण्ड रूट्स 2 रूट्स ने कार्यक्रम की मेज़बानी की।

20. इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने दस्तकार की सहभागिता से 21 से 31 अक्तूबर, 2010 को 'नेचर बाजार' का आयोजन किया। इसमें 19 राज्यों के शिल्पकारों ने अपने नवीन डिजाइनों को प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने शिल्प कार्यशाला एवं साँस्कृतिक गतिविधियों की रंगीन छटा चारों ओर विकीर्ण कर दी।

जामा मस्जिद, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ पुरालेख से राजा दीन दयाल द्वारा तस्वीर

वाराणसी में आयोजित नाट्यशास्त्र पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन सत्र

क्षेत्रीय केन्द्र

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी, गुवाहाटी एवं बंगलुरु है। इनका विवरण निम्नलिखित है:

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

इस क्षेत्र का प्रमुख कार्य कलाकोश परियोजना के अन्तर्गत चल रहे विभिन्न परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना है। इस वर्ष 4903 टाइप किए हुए कार्ड (181 कार्ड कलातत्वकोश खण्ड 7,185 कार्ड कलातत्वकोश खण्ड 8,142 कार्ड कलातत्वकोश खण्ड 9 तथा 2295 कार्ड अन्य पर) विभिन्न पाठों से चुन कर तैयार किए गए तथा दिल्ली कार्यालय को प्रेषित कर दिए गए हैं। इस समय कार्यालय में 60,063 कार्ड्स मौजूद हैं।

कार्य के सम्पादन में, अनुसंधानिक कार्मिकों ने कलातत्वकोश खण्ड 7 के प्राप्त छः लेखों में से पाँच को सम्पादन हेतु कम्प्यूटर में डाला गया।

नाट्यशाला के पाण्डुलिपियों के मिलान का कार्य प्रगति पर है। इसके पहले भाग में तेरह (13) अध्यायों का कार्य जल्द ही सम्पन्न हो रहा है।

'मीनिंग एण्ड ब्यूटी: फांउडेशन ऑफ इंडियन एस्थेटिक्स' विषयक विशेष व्याख्यान श्रृंखला के पेपरों का मोनोग्राफ जल्द ही पूरा हो रहा है।

प्रो. के.डी. त्रिपाठी के सम्पादकत्व में एक अन्य मोनोग्राफ के लोक वृत्तांत के विवरण पर 'विरह: लोकाख्यान' भी तैयार किया जा रहा है। डॉ. मनु यादव ने पाठ को अंतिम रूप देने के लिए सहायता की है।

संगोष्ठी/व्याख्यान

1. 9 से 30 नवम्बर, 2010 को इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰, वाराणसी एवं रा.पा.मि. ने संयुक्त रूप से 'टेक्सचुअल क्रीटिज़िज्म एण्ड एडिटिंग ऑफ मैन्यूस्क्रिप्ट' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।
2. कलाकोश विभाग के 22वें वार्षिक दिवस पर 23 जुलाई, 2010 को प्रो. ए.के. चटर्जी, दर्शनशास्त्र के अध्ययक्ष, बी.एच.यू. ने 'बुद्धिस्ट थ्योरी ऑफ मीनिंग' पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. दिनांक 4 से 5 जनवरी, 2011, को विद्यापीठ, वाराणसी में 'लोकाख्यान' पर दो दिवसीय संवाद एवं प्रदर्शन का आयोजन किया।

4. दिनांक 10 से 12 फरवरी, 2011 को इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ एवं व्याकरण विभाग, एस.वी. डी.वी., बी.एच.यू. के सहयोग से इंडियन एण्ड वस्टर्डन फिलोस्फी ऑफ लैंग्वेज पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

5. दिनांक 8 से 10 मार्च, 2011 को लिंकोलन यूनिवर्सिटी, यू.के. एण्ड फैक्लिटी ऑफ एस.वी.डी.वी., बी.एच.यू. ने अन्तर्राष्ट्रीय सभा 'नाट्यशास्त्र' का आयोजन किया।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

गुवाहाटी स्थित उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना चार वर्ष पूर्व इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उस क्षेत्र से सम्बन्धित परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए की गई थी। यह एक अवैतनिक संन्वायक की देखरेख में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के एन्थ्रेपोलोज़ी विभाग के सहयोग से कार्य करता है।

गुवाहाटी, क्षेत्रीय केन्द्र ने दिनांक 15 से 17 नवम्बर, 2010 को जनजातिए अध्ययन संस्थान, राजीव गाँधी यूनीवर्सिटी, अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से

'अरुणाचल प्रदेश की अलिखित एवं लुप्त प्राय: भाषाओं की स्थिति' पर एक कार्यशाला संगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यशाला में राज्य के सात समुदायों ने 26 लुप्त प्राय: भाषाओं के ग्रुप में भाग लिया। वे : कोश-आक, बुगुन, मिजि, पुरोइक, तनगम एवं नाह थीं।

सितम्बर, 2010 को 'उत्तर-पूर्व भारत में इस्लामिक धरोहर' परियोजना प्रारम्भ की गई। इसके अन्तर्गत असम ब्रह्मपुत्र घाटी एवं बाराक घाटी एवं मणिपुर आदि शामिल हैं। अनुभवी फिल्म निदेशक श्री अब्दुल मजीद के निदेशन में क्षेत्रीय अनुसन्धान एवं वीडियो के अन्तर्गत पहली कार्यशाला 6 नवम्बर, 2010 को रखी गई।

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ ने उत्तर-पूर्व भाषाओं में बाल-पुस्तकों के अनुवाद की एक परियोजना भी प्रारम्भ की गई एवं बाल-पुस्तकों के (सेट) अनुवादिक अभिज्ञान का प्रथम भाग कर लिया गया। इस संस्थान जिसे अन्वेष कहा जाता है। पहले भाग में इन छ: ग्रुपों - असमिया, बोडो, खासी, नागा, मिज़ो एवं मणीपुरी को करने का दायित्व लिया गया।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु

बंगलुरु में 19 एवं 20 फरवरी, 2011 को 'फस्ट मिलिनियम इंसक्रिप्शन ऑफ कन्नड़ा लैंग्वेज' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में सुप्रसिद्ध इतिहासकारों, शैक्षणिकों, भाषाविद्‌ों एवं विद्वानों ने प्रतिभागिता की।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र ने दुर्लभ धूमन्तू जनजाति समुदाय 'हाक्की-पीक्की' की रामायण के प्रलेखन का कार्य पूरा हो चुका है। जनजाति समुदाय के रहने का कोई निश्चित स्थान नहीं होता, वे लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। तीन मुख्य वृतांतों 'शूरपनखा वध', 'भीमान्जनेय युद्ध' एवं 'वाली-सुग्रीव युद्ध' का प्रलेखनीय कार्य लिया गया।

दिनांक 16 से 17 दिसम्बर 2010 को धरवाड में 'वचनाज' पर दो दिवसीय उत्सव रखा गया। वचनाज में 12वीं सदी के वीरा-सैवा संतों के कथन हैं। काफी लंबे समय तक यह माना जाता था कि वचनाज को संगीत के रूप में नहीं ढाला जा सकता है। हालांकि, शोधकर्ताओं ने प्रकट किया कि वचनाज की एक अलग विधा जिसे स्वर वचनाज कहा जाता है, को संगीत के रूप में ढाला गया था। इसने वचनाज को लोकप्रियता प्रदान की। उत्सव ने नौ शास्त्रीय संगीतकारों द्वारा तीन संतों के 36 वचनाज की प्रस्तुतियों को प्रलेखित किया। प्रलेखित वचनाज बासवेश्वरा, अक्कामहादेवी और देवरा दसिमय्या हैं।

हम्पी में वीरूपक्ष मंदिर में आयोजित रात्रिपर्यन्त अनुष्ठान जिन्हें फल पूजा कहा जाता है 23-24 दिसंबर 2010 को प्रलेखित किया गया था।

जीवन शैली के अध्ययन के तहत, उनके संगीत, नृत्य, पोशाक, सामाजिक अनुष्ठानों, विवाह और रीति-रिवाजों का विवरण देते हुए लम्बानी प्रलेखित किए गए थे। संदुर तालुक, बेल्लारी जिले में और उसके आस-पास रहने वाले लम्बानियों को 27 से 31 जनवरी 2011 तक किए गए प्रलेखन के लिए चुना गया था।

क्षेत्रीय कार्यालय ने कुमार क्षेत्र, संदूर की एक मंडली द्वारा लोक नाटिका

'कुमार संभव' का लगभग पाँच घण्टे तक प्रलेखन किया। कुमार क्षेत्र, बेल्लारी जिला पर इसके इतिहास को आवृत्त करते हुए एक वृत्तचित्र भी बनाया गया था।

सूत्रधार

सूत्रधार सभी प्रभागों को उनकी सभी गतिविधियों में सभी प्रशासनिक और वित्तीय सहयोग के लिए उत्तरदायी है। प्रभागों के सभी परियोजना प्रस्तावों की जाँच, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे निर्धारित दिशानिर्देशों और वित्तीय मानदंडों की पुष्टि करते हैं, इस प्रभाग द्वारा की जाती है। यह संस्कृति मंत्रालय के साथ वित्तीय अनुदान और इसके निर्देशों/सुझावों के कार्यान्वयन के लिए भी समन्वय करता है।

कार्मिक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की एक सूची अनुबन्ध पर दी गई है।

आपूर्ति एवं सेवाएं अनुभाग

यह अनुभाग कार्यालय भवनों, उपकरणों और फर्नीचर के अनुरक्षण और मरम्मत के लिए उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य–सत्कार, स्टेशनरी वितरण, परिवहन, सी.जी.एच.एस., और कार्यालय के रखरखाव के अन्य कार्यों के लिए उप–अनुभाग हैं।

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ की भवन निर्माण परियोजना

सी.वी. मैस भवन में जुड़वाँ आर्ट गैलरी, ऑडिटोरियम तथा संगोष्ठी कक्ष क्रियाशील हो गए हैं।

अनुबन्ध-1

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यासी मण्डल (31.03.2011 को)

1. **श्री चिन्मय आर. घारेखान** — **अध्यक्ष, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ न्यास**
   सी-362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली 110 024

2. **डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन**
   85, एस.एफ.एस.,डी.डी.ए. फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली 110 049

3. **श्री सलमान हैदर**
   ए-3, प्रथम तल,
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली 110 003

4. **डॉ. रोदम नरसिम्हा**
   अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्स यूनिट
   जवाहरलाल नेहरू अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
   जाकुर पी. ओ. बंगलुरु 560 646

5. **प्रो. ए. रामचन्द्रन**
   22, भारती कॉलोनी
   विकास मार्ग, नई दिल्ली 110 092

6. **डॉ. कान्ती बाजपेई**
   हैड मास्टर,
   द दून स्कूल
   माल रोड, देहरादून 248 001

7. **श्री अनिल बैजल**
   ई-524, ग्रेटर कैलाश
   नई दिल्ली 110 048

8. **प्रो. यू. आर. अनन्तामूर्ति**
नं. 498, सुरागी, एच.आई.जी. हाउस
आर.एम.वी. 2-स्टेज, 6 ए मेन,
बैंगलूरु 560 094

9. **डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम**
अध्यक्ष, नृत्योदया एवं द प्रबन्ध न्यासी
भरतमुनि फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर
ओल्ड 6, फोर्थ मेन रोड
गाँधी नगर, चेन्नई-600 020

10. **डॉ. स्वाती ए पीरामल**
उपाध्यक्ष,
पीरामल लाइफ साइंस लिमिटड,
पीरामल टॉवर, पनिन्सलर कॉर्पोरेट पार्क
लोअर परेल
मुंबई 400 013

11. **श्री जवाहर सरकार**
सचिव, भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001

12. **सदस्य सचिव, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰**
सी. वी. मेस
जनपथ,
नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-2

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची
(31.03.2011 को)

1. **श्री चिन्मय आर. घारेखान** — **अध्यक्ष**
   सी-362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली 110 024

2. **श्री सलमान हैदर**
   ए-3, प्रथम तल,
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली 110 003

3. **श्री अनिल बैजल**
   ई-524, ग्रेटर कैलाश, भाग-2
   नई दिल्ली 110 048

4. **प्रो. ए. रामचन्द्रन**
   22, भारती कॉलोनी
   विकास मार्ग, नई दिल्ली 110 092

5. **सदस्य सचिव, इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰**
   सी. वी. मेस बिल्डिंग
   जनपथ,
   नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-3

1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची

इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ में उपलब्ध ब्रिटिश लाइब्रेरी, ब्रिटिश संग्रहालय और विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय से संग्रहीत

2. साहित्य निधि (कलानिधि में निजी संग्रह से दुर्लभ किताबें)10 से 25 फरवरी, 2011
3. बृहदेश्वर मंदिर पर मल्टी-मीडिया परियोजना (तेनजावुर में आयोजित प्रदर्शनी) 24 सितंबर से 3 अक्टूबर, 2010
4. भारतीय कला टेराकोटा 12 से 16 अगस्त
5. राजा दीन दयाल: इ॰गाँ॰रा॰क॰के॰ के स्टूडियो से संग्रहीत प्रदर्शनी19 नवम्बर 2010 से 28 फरवरी 2011
6. द कॉल ऑफ इंडिया-एलिजाबेथ सास ब्रूनर और एलिजाबेथ ब्रूनर द्वारा चित्रों की प्रदर्शनी 30 अप्रैल से 31 मई 2010
7. द स्ट्रोक्स ऑफ जीनियस 6 से 30 अप्रैल 2010
8. कॉल ऑफ द टाइगर 20 अक्तूबर से नवम्बर 2010
9. दिल्ली - एक धरोहर शहर (दिल्ली - ए हेरीटेज सिटी) 20 अक्टूबर 2011 से 28 फरवरी 2010
10. चीनी और विश्व शांति के लिए सुलेख कला 3 से 7 दिसम्बर 2010
11. स्वतंत्रता मार्च : दांडी के माध्यम से गाँधी पहचान 12 से 24 जनवरी 2011
12. साझा साँस्कृतिक विरासत 26 से 29 जुलाई 2010 तक
13. कुमारजीव: दार्शनिक और द्रष्टा 3 से 5 फरवरी 2011
14. 'प्रतिरूप' आदिवासी लोक कला और तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल में आयोजित 26 जनवरी से 2 फरवरी 2011
15. अख्यान-एक मुखौटे, कठपुतलियों और भारत का चित्र शोमैन परम्परा का उत्सव 20 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 2011
16. 'जय उत्सव': महाभारत की लिविंग परम्परा का उत्सव मनाना 10 फरवरी से 10 मार्च, 2011

अनुबन्ध-4

1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित व्याख्यानों/प्रस्तुतियों/प्रदर्शनियों की सूची

1. श्री राजू बुद्धाराजू द्वारा 'ट्रस्टवर्दी डिजीटल कलेक्शन्स'
2. डॉ. निर्मला शर्मा द्वारा 'स्ट्डी एण्ड आईडेन्टीफिकेशन ऑफ द इकोनोग्राफी ऑफ द अल्ची' पर मल्टीमीडिया प्रस्तुति
3. डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा 'केलीमल'
4. प्रो. पी.पी. आप्टे द्वारा 'समरांगनासूत्रधारा'
5. 'कैन समथिंग बी पापुलर, क्लासिक, एनसिएंट एण्ड मास प्रोड्यूस्ड एट द सेम टाइम? प्राब्लमटाइज़िंग द हिस्टोरियोग्राफी ऑफ अरली इंडियन टेराकोटॉस' डॉ. नमन आहूजा
6. 'हायड्रॉलिक्स एरोनौटिक्स एण्ड मैकेनिक्स इन इंजीनियरिंग पर्सपेक्टिव' समरांगनासूत्रधारा के संदर्भ के साथ ईआर. अरविन्द फडनिस
7. डॉ. मन्दक्रान्ता बोस द्वारा 'एनसिएन्ट संस्कृति टेक्सट: हाउ दे शेपड वूमनस लाइफस?'
8. 'मॉर्डनिटी एण्ड क्लामेट चेंज: द ऐसथेटिक्स ऑफ इम्मरशन' प्रो. निकोलस मिरजोएफ
9. 'पोर्तगीज़ टाईल्स: फ्रॉम द सिक्सटींथ टू द टवन्टीथ सैन्चुरी - ए सिनोग्राफिक डिसप्ले' कुमारी साशा लिमा
10. 'बुद्धिस्ट थियोरी ऑफ मीनिंग' प्रो. ए.के. चटर्जी
11. प्रो. पी.एस. फिल्लोज़त एण्ड डॉ. वसुन्धरा फिल्लोज़त द्वारा 'कलामुख टेंपल ऑफ कर्नाटका'
12. डॉ. कपिला वास्त्यान द्वारा 'मास्क अनमास्कड, पपेट्स इनानीमेट एण्ड एनीमेट, स्टोरीज़ विदइन स्टोरीज़'
13. डॉ. नीना सबनानी द्वारा व्याख्यान फिल्म 'मेकरस ऑफ टेल्स', कावेद ट्रेडीशन्स ऑफ राजस्थान' फॉलोड बाए
14. श्री दादी डी पुदुमजी द्वारा 'थ्रू द आईस ऑफ ए मार्डन प्रेक्टीशिनियर: ट्रेडीशनल एण्ड मार्डन फॉर्म ऑफ इंडियन पपेट्री'
15. प्रो. ज्योतिन्द्र जैन द्वारा 'इंडियन पिक्चर शोमैन: ट्रेडीशन एण्ड ट्रान्सफरमेशन'
16. प्रो. जॉन इमिग द्वारा 'मान्डिग डीमोन्स, मास्किंग गॉडस: द प्रबलदा नाटक ऑफ ओरीसा'

अनुबन्ध-5

1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

1. रागलक्षण मैसूर के प्रो. आर. सत्यनारायण द्वारा संपादित और अनुवादित
2. आर्ट एण्ड आर्कोलॉजी ऑफ साऊथ ईस्ट एशिया डॉ. बच्चन कुमार द्वारा संपादित
3. बृहदेश्वर टेंपल: फ्राम एण्ड मीनिंग आर. नागास्वामी द्वारा
4. ऑन मेडिकल एनथ्रोपोलोजी ए. के. डान्डा द्वारा
5. इन्वायरन्मेंटल इश्यू एण्ड अदर ऐस्से ए. के. डान्डा द्वारा
6. स्केयर्ड कॉमप्लेक्स ऑफ द गुरुवायूर टेंपल, पी. आर. जी. माथुर द्वारा

डीवीडी एवं फिल्म

1. मौली कौशल द्वारा निर्देशित गद्दी रिच्युल फेयर्स एण्ड फेस्टिवल
2. टू पिलग्रिम्स नामक एलिजाबेथ सास ब्रूनर और एलिजाबेथ ब्रूनर के काम और जीवन पर एक वार्तालाप मल्टीमीडिया डीवीडी
3. 'मैन एण्ड मास्क' नामक वार्तालाप पर मल्टीमीडिया डीवीडी
4. एन.सी.ई.आर.टी. के निमित 'इंडियन आर्ट्स' पर डिज़ाइन और विकसित की गई मल्टीमीडिया सीडीरॉम

अनुबन्ध-6

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची (31.03.2011 को)

कलानिधि विभाग

1.	डॉ. आर. सी. गौड़	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ. अचल पाण्डे	एसोसिएट प्रोफेसर
3.	श्री बशारत अहमद	नियंत्रक (मीडिया केन्द्र)
4.	डॉ. गौतम चटर्जी	उप. नियंत्रक (मीडिया केन्द्र)
5.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड)
6.	डॉ. कीर्ति कांत शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
7.	श्री के. के. सिन्हा	रिप्रोग्राफी अधिकारी

कलाकोश विभाग

1.	डॉ. एन. डी. शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर
2.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
3.	डॉ. राधा बनर्जी सरकार	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. वी. एस. शुक्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
6.	प्रो. मंसूरा हैदर	सलाहकार

जनपद-सम्पदा विभाग

1.	डॉ. मौली कौशल	प्रोफेसर
2.	डॉ. श्रीकला शिवशंकरन	एसोसिएट प्रोफेसर
3.	डॉ. एस. साइमन जॉन	एसोसिएट प्रोफेसर
4.	डॉ. बी. एल. मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. रमाकर पन्त	अनुसंधान एसोसिएट
6.	श्री जयन्त चटर्जी	लेखा अधिकारी

कलादर्शन विभाग

1.	प्रो. अर्चना शास्त्री	प्रोफेसर
2.	डॉ. श्रीमती अनामिका विस्वास	कार्यक्रम निदेशक

दृश्य कला विभाग

1.	प्रो. आर. नंदकुमार	प्रभाग प्रमुख

साँस्कृतिक सांयत्रिक संचार

1.	श्री पी. झा	निदेशक

सूत्रधार विभाग

1.	श्री वी.बी. प्यारेलाल	संयुक्त सचिव
2.	श्री पी.आर. नायर	मुख्य लेखा अधिकारी एवं निदेशक (प्रशासन)
3.	श्री जॉय कुरियाकोस	अवर सचिव
4.	डॉ. मंगलम स्वामीनाथन	सहायक निदेशक (सूचना एवं जनसंपर्क)
5.	श्री बी.एस. बिष्ट	लेखा अधिकारी
6.	श्री टी. एलोशियस	सलाहकार (सेवा एवं आपूर्ति विभाग)
7.	श्री एस.सी. मदान	सलाहकार (इंजीनियरिंग)
8.	श्री वी.पी. शर्मा	सलाहकार (कानूनी एवं समन्वय)

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु

1.	प्रो. एस. सत्तार	अवैतनिक निदेशक
2.	डॉ. जी. ज्ञानानन्दा	सलाहकार

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

1.	प्रो. ए.सी. भगबती	अध्यक्ष एवं अवैतनिक समन्वायक

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

1.	प्रो. के.डी. त्रिपाठी	अवैतनिक समन्वायक
2.	डॉ. उर्मिला शर्मा	सलाहकार (अकादमिक)